गांव का इतिहास

हिमाचल प्रदेश के बारह जिलों के चयनित बारह गांव का विवेचनात्मक अध्ययन

(भाग - 1)

संपादक
डॉ. अंकुश भारद्वाज

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान
नेरी, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश

DEVYANI

देवयानी पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
दिल्ली

देवयानी पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
781, ग्राउंड फ्लोर, बागवान अपार्टमेंट
सेक्टर-28, रोहिणी, दिल्ली-110042
दूरभाष : 09868773692
E-mail: devyanipublishers1982@gmail.com

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान
गांव व डाकघर नेरी, तहसील व जिला हमीरपुर (हि.प्र.)
पिन-177001

प्रथम संस्करण : कलि. 5126 (2024)

© ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान

आई.एस.बी.एन. : 978-93-93751-53-9

शब्द संयोजन : रवि ठाकुर, इतिहास शोध संस्थान नेरी

मुद्रक : मिलन इंटरप्राइसिज़, नई दिल्ली

भारत में मुद्रित
देवयानी पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 781, ग्राउंड फ्लोर, भगवान अपार्टमेंट, सेक्टर-28, रोहिणी, दिल्ली-110042 द्वारा प्रकाशित तथा मिलन इंटरप्राइसिज़, दरियागंज द्वारा मुद्रित।

सहयोग : हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला (हि.प्र.)

अनुक्रमणिका

क्र.	जिला	गांव	लेखक	पृष्ठ
1.	सिरमौर	झकाण्डो	बारू राम ठाकुर	9
2.	सोलन	जौणाजी	डॉ. शिव भारद्वाज	55
3.	शिमला	बटेवड़ी	आचार्य ओम प्रकाश शर्मा	81
4.	किन्नौर	रिब्बा	रोशनी देवी, शान्ता नेगी	108
5.	बिलासपुर	पंजगांई	दामोदर गौतम	132
6.	ऊना	डोहगी	डॉ. ओम दत्त सरोच	156
			डॉ. राजकुमार	
	लेखक परिचय			187

जिला बिलासपुर

पंजगांई

दामोदर गौतम

परिचय

हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिला के खण्ड सदर के गांव पंजगांई का इतिहास, समाज, संस्कृति और सभ्यता के विविध पक्षों को समेटे हुए है। इस गांव को पांडव-भूमि भी कहा जाता है, जिसका सीधा सम्बन्ध महाभारत काल के साथ जुड़ता है। इतिहास-लेखन में दंतकथाओं का अपना एक विशेष महत्व है परन्तु इतिहासकारों के लिए लोक की मान्यताओं को तथ्यों से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य करना होता है। इसका समाधान भी समाज के अध्ययन से ही मिलता है।

पांच धारों (लघु पर्वत शृंखलाएं) एवं पर्वतों के मध्य बसे पांच गांव को स्थानीय बोली में पंचगांई कहा गया है। पंजगाईं नाम पांच गांव से मिलकर बना है। इसमें - पंजगांई, बलोह, धोणकोठी, रोपा बगोंण और कनौण गांव सम्मिलित हैं। पांच धारों से एक जगह एकत्र होने वाले पानी को 'खाल़ा' कहा गया है। गहरा स्थान जहां पानी एकत्र होता है, उसे भी खाल़ा कहा जाता है। अतः पंजगांई को 'पंजगांई रा खाल़ा' नाम से भी जाना जाता था।

भौगोलिक स्थिति

भौगोलिक दृष्टि से पूर्व में कनौण और धौणकोठी, दक्षिण में रोपा बगौण, गाहर-टिकरी, पश्चिम में पंजगांई तथा उत्तर में कुनणु-बलोह, थड़-मनाल़ गांव स्थित हैं। आंतरिक तौर पर कनोण और धौणकोठी से रौपा बगौण की दूरी डेढ़ किलोमीटर है, रौपा-बगौण से गाहर-टिकरी एक किलोमीटर और पंजगांई दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पंजगांई गांव 31^{0}23'37'' अक्षांश व 76^{0}50'24'' देशान्तर पर स्थित है। जब हम पूरे पथ को 180 अंश पर जोड़ते हैं तो यह पूर्ण घेरा 9 किलोमीटर बनकर पांचों गांवों को आपस में जोड़ता है। इसके पूर्व में पीपलू तथा डल़ीधार जिसकी ऊंचाई क्रमशः 900 और 1100 मीटर है। दक्षिण में संवा-सारडू (850-800) धार है, पश्चिम में समधार की लम्बाई 3 कि.मी. तथा ऊंचाई 750 मीटर है। उत्तर दिशा में कराड़ग जिसे औहर की धार भी कहा जाता है, की ऊंचाई 800 मीटर है। सम्पूर्ण क्षेत्रफल एक हजार हैक्टेयर है। पंजगाई बिलासपुर जिला मुख्यालय से 20 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर-पूर्व और प्रदेश की राजधानी शिमला से 80 किमी दूर है। बिलासपुर से कुल्लू-मनाली राष्ट्रीय उच्चमार्ग गांव बैरी सड़क पंजगांई से मात्र अढ़ाई किलोमीटर की दूरी से निकलता है। 2011 की जनगणना के आधार पर यहाँ की जनसंख्या 4944 दर्ज की गई है।

Panjgai Village

Location Map

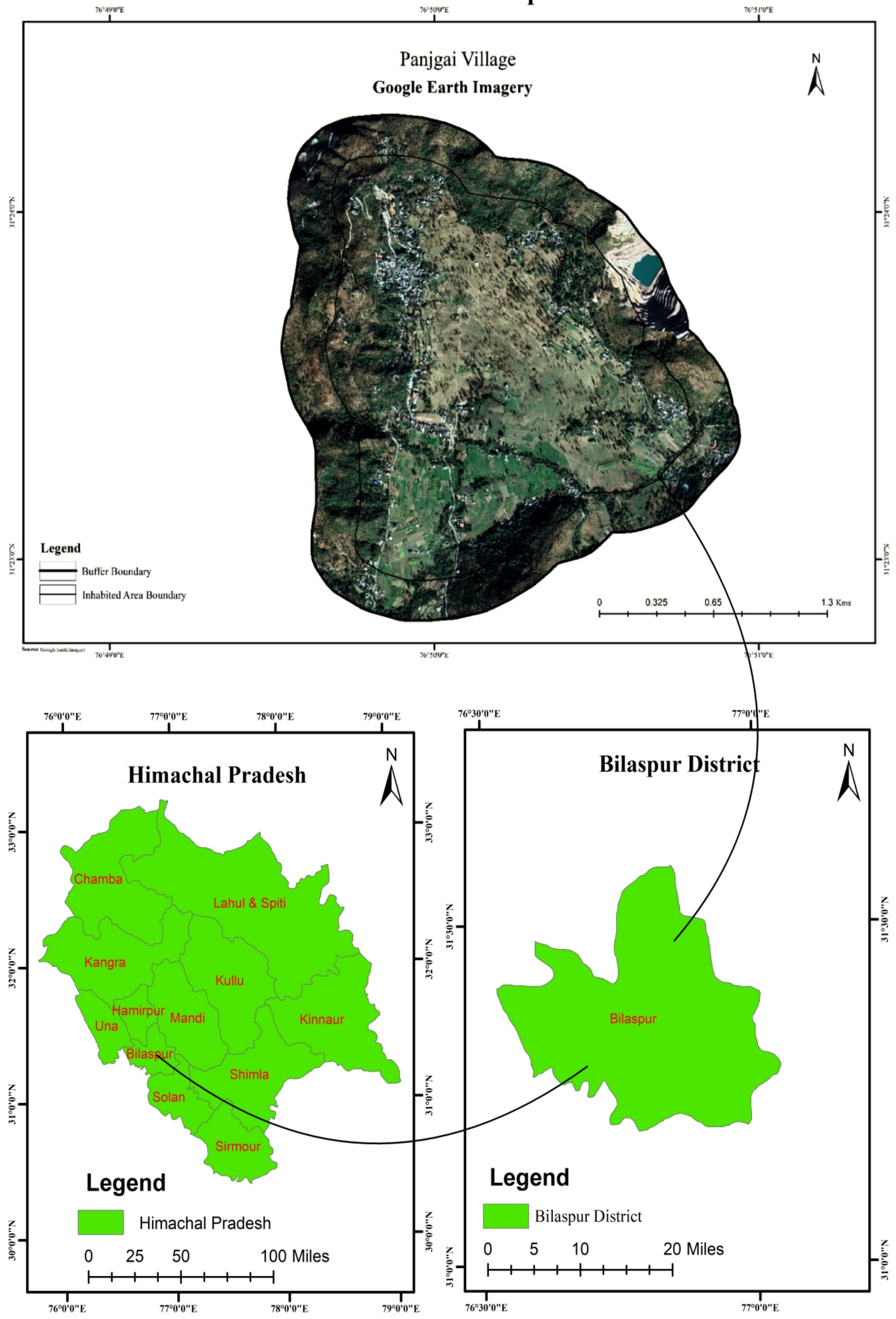

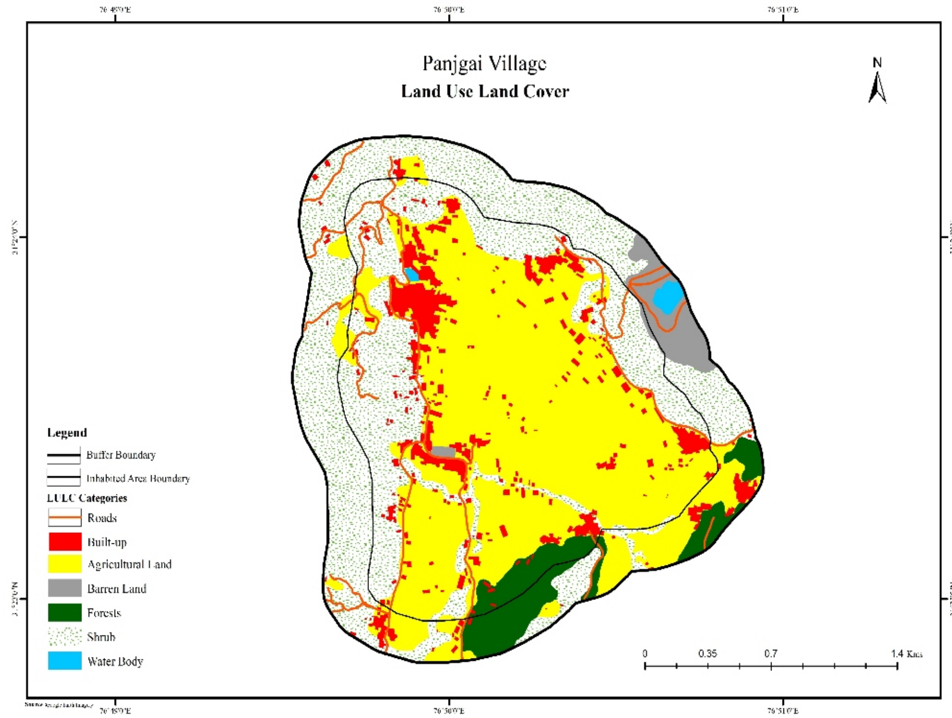
Panjgai Village
Land Use Land Cover
N
Legend
Buffer Boundary
Inhabited Area Boundary
LULC Categories
Roads
Built-up
Agricultural Land
Barren Land
Forests
Shrub
Water Body
0
0.35
0.7
1.4 Kms

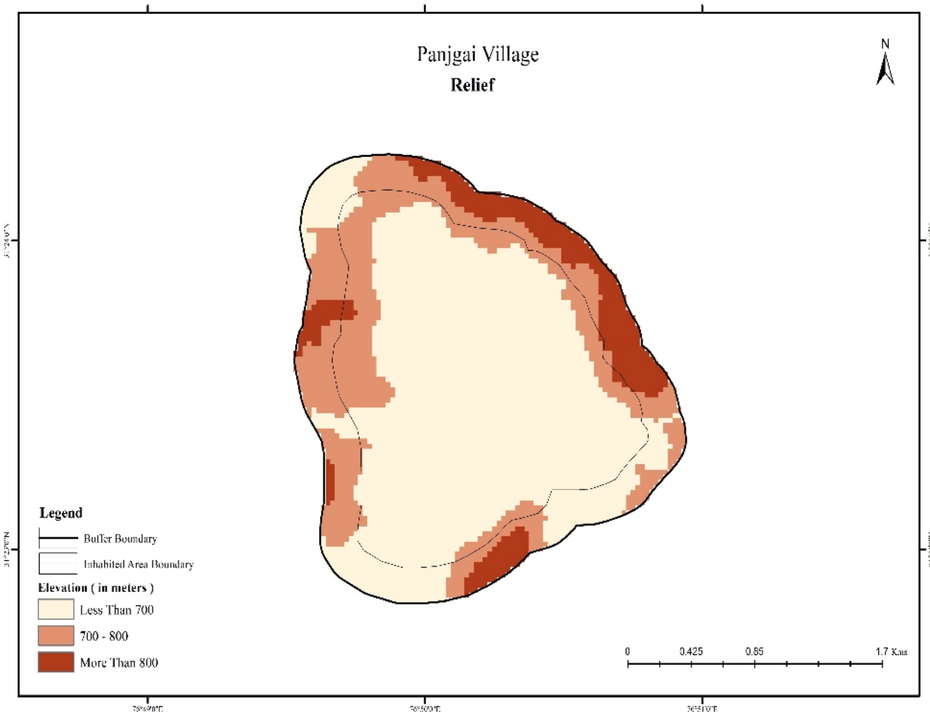
Panjgai Village
Relief
N
Legend
Buffer Boundary
Inhabited Area Boundary
Elevation (in meters)
Less Than 700
700 - 800
More Than 800
0
0.425
0.85
1.7 Kms

जलवायु

पंजगांई में भारत में आने वाली सभी छह ऋतुओं का प्रभाव सामान्यता देखा जा सकता है। बसंत ऋतु में मौसम सबसे सुहावना रहता है। ग्रीष्म ऋतु में तेज गर्मी होती है जिसे स्थानीय बोली में 'मुराड़े' कहा जाता है। मुराड़ा का अर्थ जलता हुआ अंगारा होता है। बरसात में चिपचिपी गर्मी रहती है। वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होती है। परिणामस्वरूप चारों ओर से पानी एकत्रित हो जाता है। पानी का निकास सभी गांवों से केवल दक्षिण की ओर है। श्रावण के अन्तिम 8 और भाद्रपद के प्रथम आठ दिनों को लो-संगोह कहा जाता है। कहावत है कि जितना जेठ (ज्येष्ठ) तपेगा तो उतने ही संगोह बरसेंगे। उसके बाद सर्द ऋतु का आरम्भ हो जाता है। यहाँ एक कहावत है कि आईयां दयालि़यां, गीठियां बालि़यां दीपावली आते ही अंगीठी का जलना प्रारम्भ हो जाता है। सर्द ऋतु अपने चरम पर जनवरी माह तक होती है, उसे 'मगर' कहा जाता है। उसके बाद गर्मी का आगमन हो जाता है। इसके लिए भी स्थानीय कहावत है कि **आया बसोआ, गिठिया लोकोआ**। वैशाखी आते ही अंगीठी के छुपाने की बात कही गई है।

मिट्टी : पंजगांई गांव की मिट्टी मुख्यता चिकनी, दोमट एवं रेतली है। कनौण, धौण-कोठी में मिट्टी रेतली, रौपा-बगोण में मिट्टी दौमट और पंजगांई-कुनणू, बलोह में चिकनी मिट्टी पाई जाती है। यहाँ की मिट्टी इतनी चिकनी होती है कि चिनाई करने पर सीमेंट की तरह चिपक जाती है।

जंगली जानवर : बाघ, भालू, गीदड़, तर्ख, जंगली सुअर, नीलगाय, सेडू (खरगोश), काकड़ और कोरल आदिपक्षी-कौआ, गीद, बाज, तोता, कोयल, मोर, सरेंटी, चिड़ी, जंगली मुर्गा, जलीय मुर्गा, कराख, कटफोड़ा, पीहू, उल्लू, पुठकौआ, मधुमखी, अन्य जीव-जन्तु-गिलहैरी, गोह, सांप, नौल़, जंगली बिल्ली।

इतिहास

बिलासपुर रियासत के अंतिम राजा आनन्द चन्द द्वारा लिखित पुस्तक 'बिलासपुर अतीत, वर्तमान और भविष्य' के अनुसार पंजगाई पाँच छोटे गाँव से बना एक बृहद गाँव है जिसमें पंजगांई, कनणु-बलोह, धौन-कोठी, कनौण और रोपा-बगौण आते है। पंजगांई का सम्बन्ध महाभारत के समय पाण्डव वनवास के साथ जोड़ा जाता है। पाण्डव गुफा, जमथल गांव का नाम, हिडिम्बा माता का मन्दिर, देवघाट और देव बाडूबाड़ को इसके प्रमाण के रूप में सामने रखा जाता हैं। पंजगांई का सम्बंध महाभारत काल और पाण्डव निवास के साथ जोड़ते हुए इतिहासकार रूप शर्मा बिलासपुर के राज परिवार को मध्यप्रदेश के चन्देरी के मूल निवासी के साथ जोड़ते हैं। एक लोक गाथा के अनुसार महाभारत कालीन शिशुपाल चन्देरी का शासक था। इसी वंश के शासक राजा हरिचन्द पुत्र बीर चन्द ने बिलासपुर राज्य की स्थापना की थी। राजा कल्याण चन्द (1630-1645) के आठ पुत्र थे जिन में तारा चन्द (1645-1650) सबसे बड़ा था। जब वह राजा बना तो पहले उसकी राजधानी सुन्हाणी थी, परन्तु बाद में सुन्हाणी से राजधानी बदलकर पंजगाई कर दी गई। सेवानिवत्त प्रशासनिक अधिकारी व बिलासपुर का इतिहास लिखने वाले शक्ति सिंह चन्देल ने इस बात की पुष्टि की है कि राजा तारा चन्द की राजधानी कुछ समय के लिए पंजगांई रही है। उसी समय कनौण का झरना, नौण का निर्माण भी

इसी राजा ने करवाया था। वैसे पंजगांई में राजमहल का कोई अवशेष नहीं मिलता परन्तु कनौण के साथ लगती पहाड़ी पर सवां गढ़ नाम का स्थान है। जिसे सामान्यतः आज भी गढ़ कहा जाता है। वहां पत्थरों के ढेर आज भी देखे जा सकते हैं। स्थानीय निवासी कुलदीप कुमार ने बताया कि वह स्थान आज उनके पास है और उनके पिता ने बताया था कि वहां खेत तैयार करते समय उन्हें कुछ वस्तुएं मिली थीं जिसमें एक तांबे का सिक्का भी शामिल था। लेकिन यहां कोई ऐसे अवशेष नहीं मिलते जिससे यह कहा जाए कि यहां कभी राजा तारा चन्द का राज रहा होगा। यहां निर्मित प्राचीन मन्दिर, बावड़ियां व तालाब शोध का विषय हैं।

पाण्डव गुफा : बिलासपुर को महाऋषि वेद व्यास के साथ जोड़ा जाता है। व्यासपुर से ही बिगड़कर बिलासपुर बना है। व्यास गुफा जैसी ही पंजगांई में भी एक गुफा है, जिसे पाण्डव गुफा के नाम से जाना जाता है। यह बड़ी चट्टान के नीचे एक प्राकृतिक गुफा है जिसकी 35 फीट लम्बाई, 20 फीट चौड़ाई तथा 14 फीट से अधिक उंचाई है। बड़ी गुफा में आगे की ओर दो संकरे मार्ग है। गुफा की चट्टान चूने के पत्थर की है जिसमें छोटे-छोटे छिद्र हैं। यह गांव की पूर्व दिशा में स्थित है। लोक मान्यता के अनुसार इसे पाण्डवों ने बनाया था, जिसके माध्यम से वे बिलासपुर जिला में बहने वाली सतलुज नदी की धारा को गाँव में लाकर यहाँ एक विशाल कुण्ड बनाना चाहते थे। जल कुण्ड आज भी विद्यमान है जिसने वर्तमान में एक झील का रूप ले लिया है। शोध संस्थान नेरी के सर्वेक्षण दल ने जब गुफा और झील का निरीक्षण किया तब उन्होंने कुण्ड के पानी को सतलुज के पानी जैसा पाया। इससे इसकी तथ्यपरक प्राचीनता का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। आज यह एक दर्शनीय स्थल में परिवर्तित हो चुका है।

लोक में यह बात प्रचलित है कि जब लोग गुफा में जाते और अंदर कान लगा कर सुनते तो दूसरी तरफ से पानी के बहने की आवाज देती। बताया जाता है कि जब पांडव यहां आए तब यहां मात्र जंगल ही था। पांडव इस स्थान पर हरिद्वार कुण्ड बनाना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने गुफा का निर्माण किया यह गुफा सीधे पंजगाई को सतलुज से जोड़ती है। बताया जाता है कि हरिद्वार कुण्ड बनाने की शर्त यह थी कि एक ही रात में इस कुण्ड को पानी से भरना था। लेकिन जैसे ही तालाब तैयार हुआ वैसे ही दूर किसी गुजरी की मधानी से छाछ बिलोने की आवाज आई, इस आवाज को सुनकर पांडवों को लगा कि सुबह हो गई है और वे उस कार्य को अधूरा छोड़कर वहां से चले गए। भौगोलिक दृष्टि से पंजगांई एक कुण्ड की तरह ही है, यहाँ से पानी की निकासी का दूसरे गाँव के लिए मात्र एक रास्ता है। रूप शर्मा लिखते हैं कि पंजगांई से ही पांडव भादरपुर धार होकर बाड़ी धार (सोलन) गए थे। बाड़ीधार में युधिष्ठिर की पाषाण प्रतिमा तथा सनोग और बुइआ आदि गांवों के प्राचीन मन्दिर इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। पंडोखर गांव का नाम भी पाण्डवों के कारण पड़ा, ऐसी लोक धारणा है।

जमथल : धर्मराज युधिष्ठर के नाम से गाँव का नाम जमथल पड़ा है। महाभारत के अनुसार जमथल युधिष्ठिर का ही एक अन्य नाम था। अपने अज्ञातवास के दौरान पाड़व यहां आए थे। अतः इस

गांव का नाम जमथल पड़ा। आज जमथल स्वतंत्र पंचायत है। वहां एनटीपीसी की कालोनी बनी हुई है।

देवघाट व भीमघाट : कनौण के दक्षिण दिशा में सामने की दो छोटी-छोटी पहाड़ियाँ सवाँ व सारडू के नाम से जानी जाती हैं। इन्हीं दो पहाड़ियों के मध्य देवा रा घाट (देवघाट) स्थित है। देवघाट को ही भीमघाट भी कहा जाता है। भीमघाट से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण दिशा में हरलोग (घरवासड़ा) व उसकी पत्नी हिडिम्बा माता का प्रसिद्ध मन्दिर है।

देव बाडूबाड़ा स्थल : कनौण गांव से ऊपर पूर्व दिशा में धार पिपलू और डली के बीच एक घाटी है। उस घाटी के साथ बाडूबाड़ा देव का स्थान है। स्थानीय लोगों एवं बाबा (स्वामी राममोहन दास जी, आयु 80 वर्ष) के कथन अनुसार पाण्डवों के सबसे छोटे भाई सहदेव को ही बाडूबाड़ा भी कहा जाता है। पंजगांई के टियाले़ (चबूतरा) का सम्बन्ध पाण्डव के चौसर खेल के साथ जोड़ा जाता है।

जल संसाधन

पंजगांई गांव में जल संसाधान के विविध प्रकारों में पोखर, तालाब व कुएं (जिसे स्थानीय भाषा में 'खू' कहा जाता है) मिलते हैं। खू का पानी पीने के लिए प्रयोग में लाया जाता था। दो कुएं धौण कोठी में एक बलोह व दो कुएं पंजगांई कुन्नू में है। इनमें चार कुएं प्राचीन तथा एक नवीन बनाया गया है। कुल आठ बावड़ियां हैं जिनमें सालभर पानी रहता है। कनौण में एक बड़ा झरना भी है। सभी बावड़ियों के साथ कोई न कोई मन्दिर और पीपल का पेड़ मौजूद है। यहां की बोली में जलस्रोतों को 'सूड़ा' कहा जाता है। सदियों पुराने इस गाँव में प्रस्तर की शिलाओं से बना एक कुआं है। गाँव के साथ ही बलोह और धौन-कोठी में बने दो कुएं भी लगभग 400 वर्ष पुराने बताए जाते हैं। अन्य स्रोत जो प्राचीन हैं उनमें कनौंण बावड़ी भी शामिल है। पानी के सूडे दो छोटे-छोटे यानी छोटी-छोटी बावड़ियाँ, कनौंण और धौन-कोठी गांव के मध्य स्थित हैं।

पंजगांई बाग की पुरानी ऐतिहासिक बावड़ी : यह एक ऐतिहासिक बावड़ी है और प्रस्तर शिलाओं से बनी है। जब गांव में नल नहीं हुआ करते थे तो नातड़ा, पंजगाई, पुनणु, थडू मनाल के लोग वहीं से पीने का पानी ले जाते थे। अभी भी उनकी सभी धार्मिक क्रियाएं इसी बावड़ी के किनारे ही पूर्ण की जाती हैं।

कनौण जलस्रोत : इसका उद्‌गम बड़े बाबा (शेर वाले बाबा) की समाधि स्थल के साथ पीपल के पेड़ के नीचे एक चट्टान से हुआ है। इस स्रोत के साथ राम मन्दिर और आम का एक बगीचा है। इस पानी को स्थानीय लोग पीने और सिंचाई के लिए प्रयोग में लाते हैं।

पंजगाई पोखर (तालाब) : पंजगांई गाँव में बरसाती पानी के संग्रहण हेतु एक विशाल 'पोखर' अर्थात् तालाब बना हुआ है, जो गांव की सुरक्षा, पशुओं के लिए पानी की उपलब्धता तथा जलस्तर को बनाए रखने में सहायक है।

पंज बेंटलू (पांच छोटे कुएं) **:** टिकरी गांव में नामक पांच छोटी-छोटी बावड़ियाँ हैं। जिन्हें पंच बेंटलू कहते हैं। इन बावड़ियों का सम्बन्ध पाण्डवों से जोड़ा जाता है। इस स्थान पर एक प्राचीन शिव

मन्दिर है जो पाण्डवों द्वारा निर्मित बताया जाता है। इस स्थान पर संक्रान्ति, पूर्णिमा या अन्य धार्मिक दिनों में स्नान करना पुण्य कार्य माना जाता है। वर्तमान में इन बावड़ियों पर लींटर डालकर उसे एक नया स्वरूप प्रदान किया गया है।

धार्मिक स्थल

पंजगांई में राधा कृष्ण, गुग्गा, गणेश, मुरारी माता, हनुमान और लखदाता मंदिरों की प्रसिद्धी दूर-दूर तक हैं। कुनणु में शिव मन्दिर, बलोह में एक सिद्ध मन्दिर और जालपा मन्दिर, धौण-कोठी में राधा-कृष्ण व भराड़ी माता का मन्दिर है। कनौण में कामाक्षा माता, सिद्ध बाबा बालकनाथ, शिव मन्दिर और राम मन्दिर (चार धाम मन्दिर) हैं। रोपा-बगोण में सिद्ध मंदिर, गाहर टिकरी सदा शिव मन्दिर, भीम पहाड़ी शृंखला में हिडिम्बा माता के मन्दिर हैं। प्राचीन मन्दिरों में लखदाता, राधा-कृष्ण मन्दिर, सदाशिव मन्दिर, कामाक्षा माता मन्दिर, राम मन्दिर और हिडिम्बा माता मन्दिर आते हैं।

सदाशिव मन्दिर ः सदाशिव मन्दिर टिकरी गांव में स्थित है। इस का सम्बन्ध पाण्डवों के साथ जोड़ा जाता है। यहां स्थापित शिवलिंग की ऊंचाई डेढ़ फुट है। इसके नीचे पांच बांवड़ियां हैं। वर्तमान में यह एक बड़े मन्दिर का आकार ले चुका है। मन्दिर के बाहर पीपल का एक विशाल वृक्ष है जिसकी आयु लगभग 500 वर्ष बताई जाती है। काफी समय से यहां स्थानीय जनों द्वारा शिव पुराण कथा व भण्डारा आदि किया जा रहा है। लोक मान्यता के अनुसार यहां का शिव मंदिर पांडवों ने स्थापित किया है। क्षेत्र के लोग व्रत और बड़े त्योहारों के दिन यहां स्थित बावड़ियों के पानी से स्नान करने आते हैं।

जालपा माता मन्दिर ः पंजगाईं के साथ जमथल नामक स्थान में जालपा माता की प्रतिमा है। ऐसी दंतकथा है कि यहां दयाला नामक किसान खेतों में हल चला रहा था तो एक स्थान पर बैल रुक गए। जोर लगाने पर भी वे आगे नहीं बढ़े। उस स्थान पर खुदाई करने पर एक अंडाकार आकृति प्राप्त हुई। इसी पिंडी को जालपा माता का प्रतीक माना जाता है। एक रात किसान दयाला को सपने में एक कन्या आई। जिसने उसी स्थान पर जालपा माता का मन्दिर बनाने का आदेश दिया। 'थडवाल' गौतम गोत्रियों की कुलदेवी जालपा माता है। कुनणू में भी गौतम हैं परंतु उनकी कुल्जा (कुलदेवी) अलग है, इन गौतमों को 'कनौणायक' कहते हैं।

राधा-कृष्ण मन्दिर ः राधा-कृष्ण का एक मन्दिर धौण-कोठी और दूसरा पंजगाईं में है। पंजगांई का राधा-कृष्ण मन्दिर गांव का ईष्ठ-देव मन्दिर माना जाता है। इस मन्दिर में महन्त राममोहन दास वर्ष 1986 से इस मन्दिर की देखरेख कर रहे हैं। नई फसल आने पर गांव के सभी लोग सर्वप्रथम अपनी फसल का कुछ अंश इस मन्दिर में अर्पित करते हैं। यहां साल भर भण्डारे चलते रहते हैं। नवरात्रों में विशेष लंगर व्यवस्था रहती है। महंत ही यहां के पुजारी हैं। यह स्थान धार्मिक और सामाजिक कार्यों का विशेष केन्द्र भी है।

कामाक्षा माता मन्दिर ः कामाक्षा माता मन्दिर, कनौण गांव के मध्य में है। कामाख्या माता जिला मण्डी के करसोग से कनौण में बसे ब्राह्मणों की कुलदेवी है। इसका इतिहास यहां पर तीन सौ वर्षों

का है। माता की प्रतिमा प्रस्तर की है, जिसे काओ-ममेल (करसोग-मण्डी) से लाकर यहां प्रतिष्ठित किया गया है। सैंकड़ों प्रतिदिन यहां मन्दिर में पूजा करते हैं। यहां प्रतिवर्ष लाहौल मनाई जाती है जिसमें मिट्टी का गडवा और शिव-पार्वती की पिंडियां बनाकर पूरे चैत्र महीने इनकी पूजा की जाती है। संक्रान्ति के दिन शिव-पार्वती के विवाह की रस्म पूरी कर भण्डारे का आयोजन होता है। पश्चात् शिव-पार्वती की मूर्तियों को सतलुज में विसर्जित किया जाता है।

राम मन्दिर (चार धाम मन्दिर) : कनौण बाग मन्दिर को ही राम मन्दिर कहा जाता है। मन्दिर की दीवारों पर 16वीं सदी के सन्त बाबाओं के रहने और उनके चमत्कारिक कार्यों का विवरण है। दीवार पर लिखे नामों की सही जानकारी प्राप्त करना बड़ा दुष्कर कार्य है। वर्तमान समय में भी यहां चमत्कारी बाबा रह रहे हैं। जिनमें बाबा जमना दास का नाम महत्त्वपूर्ण है। इस मन्दिर में अखण्ड धूना जल रहा है। मन्दिर के निकट कच्ची मिट्टी की बनी हुई एक कुटिया थी जिसमें महाराज मदुसूदन ने 1971 से 2001 तक निवास किया था। बलोह गांव के हवलदार सन्तराम की पत्नी रामदेवी को स्वप्न में महाराज मदुसुदन जी दिखाई दिए जिन्होंने अधूरे पड़े इस मन्दिर के विस्तार का आदेश दिया। इस मन्दिर का निर्माण-कार्य महाराज मदुसूदन के समय में प्रारम्भ हुआ था। कनौण गाँव के ऊपर जंगल मे देवसिद्ध स्थान है। इस स्थान में निम्नलिखित संत तपस्या कर चुके हैं। राम मन्दिर चार धाम में लगी सूची इस प्रकार है–

1. 16 वीं सदी के सिद्ध संत श्री श्री 1008 शेर वाले (बड़े बाबा जी)।
2. 17 वीं सदी के सिद्ध संत श्री श्री 1008 (अमुख नाम)।
3. 17 वीं व 18 वीं सदी के सिद्ध संत श्री श्री 1008 श्री गिरिवर दास जी
4. 18 वीं सदी के सिद्ध संत श्री श्री 1008 (अमुख नाम)
5. 18 वीं व 19 वीं सदी के सिद्ध संत श्री श्री 1008 श्री महंत आत्मा राम जी महाराज
6. 20 वीं सदी के सिद्ध संत साकेत वासी श्री श्री 1008 श्री मधुसुदन दास जी
7. वर्तमान में सन्त किशोर दास इस स्थान के महन्त हैं।

ऐसी मान्यता है कि बिलासपुर जिला से संबन्धित चमत्कारी सिद्ध काला बाबा को इसी देव स्थान में शक्तियां प्राप्त हुई थीं। काला बाबा का पंजगाई से थोड़ी दूरी पर सोलग में प्रसिद्ध स्थान है। काला बाबा कुछ वर्ष पूर्व ही ब्रह्मलीन हुए। वह इस क्षेत्र में चमत्कारी शक्तियों के लिए जाने जाते थे। गाँव में खाला दरबार नामक मियां का मंदिर है जहां राधा-कृष्ण की पूजा-आराधना की जाती है। दूर-दूर से लोग यहाँ मन्नत मांगने के लिए आते हैं।

लखदाता मन्दिर : लखदाता देव का सम्बन्ध पशुधन से है। जब भी घर की गाय या भैंस प्रसूता होती है तो पहले निकले घी से लखदाता की पूजा की जाती है। साथ में पशु के खूण्टे की पूजा भी होती है। हिन्दू व मुसलमान सभी इसकी पूजा करते हैं। इसकी पूजा प्रतिदिन होती है। वर्तमान में कन्हैया राम इसके पुजारी हैं। लखदाता से अपनी मनोकामना पूरी होने पर लोग दंगल का आयोजन भी करते हैं। यह मन्दिर नातड़ा केन्द्र से आधा किलोमीटर की दूरी पर है।

सामाजिक स्थापनाएं

पंजगांई में ब्राह्मण, राजपूत, लौहार, कुम्हार, चर्मकार, जुलाह, डूम, जाट, छिम्बा, नाई, थांवी, तेली, कोली तथा मीयें (क्षत्रीय), खत्री, सुनार आदि सभी जातियों के लोग इन पांच गांवों में रहते हैं। इन सबकी अलग-अलग टोलियां हैं। ये टोलियां जाति, स्थानीय समूह व गोत्रों पर आधारित हैं। पंजगांई गांव में विभिन्न टोलियों और गोत्र के ब्राह्मण जिन्हें अलग-अलग नाम से जाना जाता है एक दूसरे के साथ वैवाहिक संबंध बना सकते हैं। गांव के उत्तरी छोर पर एक तालाब है जिसके पूर्वोत्तर में एक छोटा सा टीला 'थड़' कहलाता है। यहां के निवासियों को 'थड़वाल' कहा जाता है। कुछ परिवारों का गोत्र गौतम है और वे जमथल में बसे रघुवंशी राजपूतों के पुरोहित हैं। इनकी कुलदेवी माता जालपा है। इनकी एक शाखा को 'करकड़े' कहते हैं। इसी तरह पोखर के दक्षिण पूर्व में एक और छोटी सी पहाड़ी है। इसे 'थान' कहा जाता है। इसके साथ बसे परिवार की टोली को 'साणु' कहते हैं। इनके साथ ही एक टोली भारद्वाज गोत्र की है जिन्हें 'कुहाड़े' कहते हैं तथा इनकी पश्चिम की ओर गली पार 'शेखड़ो' (सेखड़े) की टोली है। इसके नीचे 'डयोडु' हैं। राजाओं के महल के मुख्य द्वार 'डयोढ़ी' पर पहरा देने के कारण इन्हें 'डयोडु' कहा जाता है। इनके साथ लगती जमीन के निचले हिस्सों में बसे लोगों को 'पवादे' कहते हैं। ऐसे ही 'पवादों' बस्ती के साथ पश्चिम की ओर के लोग 'लंगाह' कहलाते हैं। गांव के मध्य से निकलने वाली मुख्य गली के पार पश्चिम की ओर बसी टोली को 'हटवाल' कहा जाता है इन्हें 'हटवाल शांडिल्य' भी कहते हैं। इनका गोत्र शांडिल्य है। हटवाल मोहल्ले के पीछे एक छोटी सी गली है उसके पार पश्चिम की ओर बसी टोली को उपाध्याय कहते हैं। स्थानीय भाषा में इन्हें 'ऊपरले पवादे' कहते हैं क्योंकि निचले उपाध्याय एक अलग टोली है। इस टोली के साथ आगे खत्री परिवार हैं। खत्री परिवारों का गोत्र कौशल है। खत्री व निचले उपाध्याय परिवारों के पश्चिम की ओर गली पार के परिवार आखड़े कहलाते हैं। इससे उत्तर पश्चिम में बसे परिवार 'रूटु' नाम से पुकारे जाते हैं। इनके साथ ही लगते परिवारों को आखरे कहते हैं। 'आखरों' का गोत्र मोदगिल है। इस प्रकार बीच में कुछ परिवारों को उपनाम दिए गए हैं जैसे-कूबड़े, लामे, डाने, बल्लू, लाभे, जोहड़े, नहाण, भयुन्तु, कौशिक आदि। कुल मिलाकर मुख्य रूप से पंजगाईं बस्ती को 22 मुइयां पंजगाईं का खाल़ा कहते हैं, क्योंकि यहाँ ब्राह्मणों की लगभग 22 टोलियाँ रहती हैं।'

कनौण के इतिहास का सम्बन्ध काओ-ममेल, करसोग जिला मण्डी के साथ जुड़ा हुआ है। यह जानकारी तन्त्र-ज्ञाता श्री बंसीराम (आयु 70 वर्ष) से करसोग में प्राप्त हुई। इस बारे में यहां जो घटना प्रचलित है उसके अनुसार कहलूर रियासत के राजा ने एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया हुआ था। इस यज्ञ में जो सामग्री भण्डारे के लिए एकत्रित की हुई थी, उसमें घी के एक घड़े में सांप मर कर गल चुका था। करसोग का एक विद्वान ज्योतिष काग-भाषा का ज्ञाता था, उसने इसे राजा तक पहुंचाना अपना धर्म समझा। जिस घड़े में वह मरा सांप था, उसकी पहचान कर राजा को बताया। ज्योतिष द्वारा बताई बात सत्य सिद्ध हुई। यज्ञ पूर्ण होने के बाद राजा ने उस ज्योतिषी से मिलने की इच्छा व्यक्त की।

जब दोनों मिले, तो राजा ने पंजगाई में बसने का आग्रह किया। ज्योतिषी ने राजा की बात मान ली और वहीं बस गया। कनौण गांव में आज उसी ज्योतिषी की संताने हैं जिनके 55 परिवार हैं और सब एक ही गांव में रहते हैं। करसोग से यहां आने पर वह अपने साथ अपनी कुल देवी, कामाख्या को भी लाए। आज कनौण में गांव के मध्य मां कामाख्या का मन्दिर एक विशाल स्वरूप ले रहा है। बंसीराम शर्मा ने बताया कि करसोग कामाख्या को मानने वाले ब्राह्मण जहां भी गए। सभी अपने साथ अपनी कुलदेवी ले गए। उन्होंने सहयोग के लिए सलापड़ से एक ब्राह्मण परिवार लाया। जिसके कनौण में आज 25 परिवार रहते हैं। इस क्षेत्र में राजपूत की सात टोलियां जाती हैं टटोही, जमथली, हरनोडू, नयोड़ू, दलगवाल, मल्याड़ू और कसोलड़। ये टोलियां अपने मूल स्थान के नाम हैं। जैसे जमथल से जमथली यहां आकर बसे हैं। इनका यहां आकर बसने का काल अलग-अलग है। इनके 140 परिवार हैं। ये सब धौन-कोठी में रहते हैं। परन्तु सभी अपनी पहचान को यथावत बनाए हुए हैं। इनके अतिरिक्त इस क्षेत्र में अन्य समुदाय के भी अनेकों परिवार निवास करते हैं। यथा — तरखान-8, लौहार-5, चर्मकार-60, बुनकर-25, छिम्बा-3, जाट-5, नाई- 4, थांवीं-1, कोली-10, कुम्भकार-10, तेली-2, मिएं-1, खत्री-12, सुनार-1 आदि। पंजगाई स्थित नातड़ा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख स्थान है। नातड़ा चारों ओर से आने-जाने वाले लोगों का मेल-जोल का केन्द्र क्षेत्र में है, नातेदारी से ही नातड़ा शब्द दुख-सुख के कारण बना है।

गृह संरचना

1980 के दशक तक पंजगाईं क्षेत्र में दो प्रकार से गृह निर्माण संरचना अवलोकित होती है। एक घास और दूसरा स्लेट की छत वाले कच्चे मकान। सामान्यतः कम आय वर्ग के लोगों के घास के मकान और सामान्य आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के स्लेट वाले। आज घास वाले घर तो समाप्त हो चुके हैं परन्तु इक्का-दुक्का स्लेट वाले मकान अवश्य देखे जा सकते हैं। वर्तमान में सीमेंट के 90 प्रतिशत पक्के मकान हैं। कच्चे मकानों में सामान्यतः दो कमरे, बीह् और ओबरा होता था। बड़े मकानों में एक बीह्, एक पौड़ा, दो ओबरे और दो बावड़ी होती थी। बड़े कच्चे मकान अधिकतर दो मंजिला होते हैं, जिसमें निचली मंजिल के बाहर वाले कमरे को बीह् और अन्दर वाले दो कमरों को 'ओबरा' कहा जाता है। इन मकानों की दूसरी मंजिल के बाहर वाले बड़े कमरे को पौड़ा तथा अन्दर वाले दोनों कमरों को 'बाउड़' कहते हैं। मकान में ओबरों की बनावट इस प्रकार की होती कि गर्मियों में ठण्डक और सर्दियों में गरमाहट रहे। ओबरों में अन्न भण्डारण हेतु एवं प्रसूति काल में महिलाओं के रहने के लिए उत्तम माना जाता था। बावड़ी में मेहमानों को ठहराया जाता था। यह हवादार और प्रकाश-युक्त होते थे। इन मकानों की लिपाई मिट्टी से की जाती, जिसके ऊपर गोबरयुक्त मिट्टी का घोल 'दलेवा' दिया जाता था, फिर उसके ऊपर रंगों के आधार पर गोलू मिट्टी से लिपाई की जाती थी। और यह सारा कार्य केवल महिलाओं ही करती थीं। नौवें दशक के बाद भवन निर्माण विधि और इस्तेमाल होने वाली सामग्री में पूर्णतया परिवर्तन आ चुका है। वर्तमान समय में गांव के सारे मकान आधुनिक सुविधाओं से युक्त

बनाए जा रहे हैं। कनौण में यदि आज घरों की शृंखला को देखा जाए तो वह एक शहर से अधिक सघन है। हर घर एक-दूसरे से सटा हुआ है। इसका मुख्य कारण गांव की जनसंख्या में लगातार वृद्धि होना है। कृषि भूमि सीमित होने के कारण जोत छोटे पड़ रहे हैं तथा सिंचित कृषि भूमि के दृष्टिगत लोग इस पर घर बनाना उचित नहीं समझते हैं। इसलिए आज पंजगांई में तीन से चार मंजिल तक पक्के मकान भी एक दूसरे से सटे हुए हैं। कनौण गांव में पीने के ठण्डे पानी के लिए फ्रिज का प्रयोग न करके बावड़ी का पानी इस्तेमाल किया जाता है। प्राकृतिक कारणों से बावड़ी का पानी सर्दियों में गर्म और गर्मियों में शीतल रहता है। यह बावड़ी गांव के मध्य स्थित है।

सांस्कृतिक जीवन

मेले, त्यौहार और उत्सव गाँव के सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। मेले और त्यौहार हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। इस गाँव में प्रतिवर्ष मेले और त्यौहारों के अवसर पर सामाजिक समारोह भी आयोजित किए जाते हैं। पंजगाई और उसके आस-पास के गाँवों में जिन मेलों को मनाया जाता है, उनका विवरण निम्न प्रकार से है - गुगा मेला बरमाणा और बागा रा मेला पंजगाईं।

गुगा मेला बरमाणा

पंजगाईं गांव की उत्तर दिशा में बरमाणा क्षेत्र का भटेड़ गांव है। वहां पर श्री गुग्गा जाहरवीर का मंदिर है। इसी स्थान पर रक्षाबन्धन के दसवें दिन तीन दिनों तक मेले का आयोजन होता है। पंजगांई गांव के लोग गुग्गा जाहरवीर के प्रति बहुत श्रद्धा भाव रखते हैं। भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से नवमी तिथि तक गांव के प्रत्येक परिवार का कोई न कोई सदस्य हाथ में छड़ी लेकर घर-घर जाकर 'जय गुग्गा जाहरवीर' का तीन बार उच्चारण करता है। घर के लोग उसे कुछ आटा, अन्न और पैसे देते हैं। इसे 'श्री गुग्गा जी की कार' कहा जाता है। कार से तात्पर्य यहां गुग्गा जी ने प्रति आवश्यक प्रार्थना और आराधना से है। कार में मिले अन्ना का आटा पिसवा कर उसका रोट बनाकर भोग के रूप में गुग्गा वीर को अर्पित किया जाता है। इस दौरान कुछ लोग 7 से 9 दिनों तक व्रत भी रखते हैं। मुख्यतः रक्षाबंधन के बाद श्रावण और भाद्रपद महीनों में लोग गुग्गा वीर के व्रत रखते हैं। इस दौरान गुग्गा मंडली द्वारा घर-घर जाकर गुग्गा वीर के गीत भी गाए जाते हैं। लोक मान्यता है कि ऐसा करने से गुग्गा जाहरवीर प्रसन्न होकर घर की सांपों से रक्षा करते हैं। गुग्गा-नवमी वाले दिन इस गांव के प्रत्येक घर का सदस्य गुग्गा मंदिर जाकर भेंट चढ़ा आशीर्वाद लेता है। आशीर्वाद स्वरूप उसे गुग्गा जी की मिट्टी दी जाती है। ऐसी मान्यता है कि इस मिट्टी को घर में रखने तथा इर्द-गिर्द फैलाने से सांपों का कोई भय नहीं रहता। लोकमान्यता है कि अगर कोई आदमी गुग्गा जी के प्रति उक्त समस्त प्रक्रिया नहीं अपनाता तो उसके घर में सांप निकलने शुरू हो जाते हैं। तब उस व्यक्ति को गुग्गा जी के मन्दिर जाकर क्षमा याचना करनी पड़ती है। पंजगाईं गांव के लोग श्री गुग्गा जाहरवीर जी को ग्रामरक्षक भी मानते हैं। यहां के लोकगीतों में गुग्गा के गीत भी गाए जाते हैं जिन्हें 'भारथा' कहा जाता है। गुग्गागीत का कार्यक्रम लोग अपने घरों में करवाते हैं जिसे 'डेरा' कहा जाता है।

बाग मेला पंजगाई : पंजगाई का ऐतिहासिक राधाकृष्ण मंदिर शिक्षा, संस्कार का बड़ा केन्द्र है। वर्तमान में यहां स्वामी राममोहन दास रहते हैं। इसी के प्रांगण में पंजगाईं का एकमात्र मेला ज्येष्ठ मास 15-16 प्रविष्टे को प्रारम्भ होता है। मेले के तीसरे दिन बड़ा दंगल होता है। लोक विश्वास है कि यह मेला पाण्डव काल से चला आ रहा है। हिमाचल प्रदेश में प्रचलित लगभग सभी पंचांगों में इस मेले के बारे में उल्लेख मिलता है। मेले में हज़ारों की संख्या में सर्वसमाज के लोग भाग लेते हैं। यहां बड़े स्तर पर वस्तुओं क्रय-विक्रय होता है। युवाओं और पहलवानों के लिए कुश्ती का आयोजन किया जाता है जिसमें दूर-दूर से पहलवानों को बुलाया जाता है। यह कुश्ती गांव के लोगों के सहयोग से करवाई जाती है। कुश्ती आयोजन की पहली रात को लखदाता की पूजा होती है इसे 'स्वाल' कहा जाता है। यह परंपरा सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है। इस दौरान यदि गांव में किसी की मृत्यु हो जाए तो कुश्ती आयोजन को रद्द कर दिया जाता है लेकिन मेला चलता रहता है।

त्यौहार

हिमाचल प्रदेश में मनाए जाने वाले त्यौहारों का प्रदेश में बदलती ऋतुओं से सीधा संबंध है। प्रत्येक नई ऋतु के आने पर कोई न कोई त्यौहार मनाया जाता है। इसी के साथ कुछ त्यौहारों का संबंध नई फसल से भी है। त्यौहारों की तिथियां विक्रमी संवत् के अनुसार निश्चित होती हैं। प्रत्येक महीने का पहला दिन साजी (संक्रांति) कहकर पुकारा जाता है। कई लोग इस दिन व्रत रखते हैं। पूर्णिमा भी को शुभ माना जाता है। प्रत्येक त्यौहार के समय विवाहित लड़कियों को अपने घर बुलाना माता-पिता अपना धर्म समझते हैं। यहां मनाए जाने वाले त्यौहार निम्न हैं–

बैशाखी : बैशाखी का त्यौहार पहली बैशाख को मनाया जाता है। इस त्यौहार का संबंध रबी की फसल से है। इस दिन बिलासपुर के मारकण्डा तथा अन्य तीर्थ स्थानों पर स्नान करना पवित्र माना जाता है।

छिंज : छिंजों का मन्नत और जोड़ में व्यक्तिगत आधार पर आयोजन किया जाता है और जोड़ प्रतिवर्ष चैत्र महीने में स्थानीय देवता लखदाता के प्रति श्रद्धा के अन्तर्गत की जाती है। इसमें दूर-दूर से पहलवान भाग लेते हैं।

रास-लीला : पंजगाईं में वृंदावन से 1960 के दशक में रास-धारी कलाकार आते थे। प्रतिवर्ष एक सप्ताह तक रासलीला का मंचन करते थे। रामलीला के मंचन के दौरान आसपास के गांवों के सैकड़ों लोग आया करते थे। कनौण में कृष्ण-लीला का मंचन स्थानीय कलाकारों द्वारा भी किया जाता था। 1978 के बाद कृष्णलीला का मंचन बन्द हो चुका है।

राजस्थान के बहुरूपिये : राजस्थान के कलाकार प्रतिवर्ष विभिन्न देवी-देवताओं के मुखौटों को लगाकर, लोगों का मनोरंजन करके समाज को शिक्षित करने का प्रयास करते हैं। एक स्थान पर कलाकार अपना केन्द्र बना लेते हैं और वहीं से आठ-दस गांव में अपना प्रदर्शन करते हैं। बाद में लोग उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार धन आदि देते हैं। उनका यह प्रदर्शन प्रायः दिसम्बर और जनवरी माह में होता है।

जागरण या जगराता : जगराता साल के किसी भी दिन, किसी भी देवता के निमित्त आयोजित किया जा सकता है परन्तु भाद्रपद (अगस्त) महीने का जगराता विशेष महत्व रखता है। जागरण के गायक के तौर पर बलोह गांव के सुरेश वर्मा प्रसिद्ध हैं। जगराते के लिए अनेक जागरण पार्टियां बनी हुई है। जिन में सुभाष (सागर) मस्तराम और भागा देवी गांव रोपा वाली की पार्टियां प्रमुख हैं। जगराते वाले दिन देवी माता को घर में बुलाकर कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। जगराता रखने वाले परिवार और अड़ोस-पड़ोस एवं गांव के लोग सारी रात जागकर देवी-देवता का कीर्तन गान करते हैं।

बरलाज : दीवाली के दूसरे दिन विश्वकर्मा की स्मृति में सभी लोग अपने औजारों, मशीनों, शस्त्रों का पूजन करते हैं, मौली बांधकर तिलक लगाते हैं। उस दिन किसी भी प्रकार का औजार इस्तेमाल नहीं करते। घर पर पटांडे और घी-दूध को तैयार किया जाता है। तीसरे दिन भैया-दूज का त्यौहार मनाया जाता है।

लोहड़ी : यह त्यौहार प्रथम माघ की संक्रांति को मनाया जाता है। कहीं-कहीं इसको लोहड़ी या मकर संक्रांति कहते हैं। इस दिन पंजगांई गांव के लोग बाग मन्दिर की बावड़ी में स्नान करते हैं। यहां स्नान करना शुभ माना जाता है। स्नान के बाद लोग मन्दिर में पूजा करते है एवं चावल, माह और घी मन्दिर में चढ़ाते हैं। घरों में पकवान के रूप में चावल और माश की दाल की खिचड़ी बनती है, जिसे घी या दहीं के साथ खाया जाता है। गांव में अंगीठे जलाए जाते हैं। यहां रात को लोग भजन-कीर्तन करते हैं। गांव के बच्चे, लड़के और लड़कियां अलग-अलग टोलियों में आठ दिनों तक घर-घर जाकर लोहड़ी के गीत गाते हैं जैसे- **एक कुड़ी दे लम्बे बाल़ गुत्ता करदी फुल्लां नाल़, फुल्ल हो गए चोरी, ताँ दे भाई लोहड़ी।** इस तरह से बच्चे घर-घर जाकर लोहड़ी गाते हैं और लोग खुशी-खुशी उन्हें खाने के लिए अलग-अलग मिठाईयां या फिर पैसे देते हैं।

रामलीला : पंजगांई के नातड़ा मैदान में प्रतिवर्ष रामलीला का आयोजन किया जाता है। जिसका संचालन स्थानीय रामलीला कमेटी करती है। यह कहना मुश्किल है कि इसे प्रारम्भ हुए कितना समय हुआ है। सैंकड़ों लोग प्रतिवर्ष रामलीला का आनन्द लेते हैं।

दशहरा : यह त्यौहार आश्विन मास के नवरात्रों के अंत में मनाया जाता है। यह त्यौहार भारत में विजय दशमी नाम से भी जाना जाता है। त्यौहार से पहले नौ दिनों तक रामलीला का मंचन किया जाता है तथा दशमी के दिन रावण, मेघनाद व कुम्भकर्ण के पुतले जलाए जाते हैं।

होली : यह त्यौहार फाल्गुन पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री, पुरुष रंग और गुलाल की होली खेलते हैं और एक दूसरे को रंग लगाते हैं।

शिवरात्रि : फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चौदहवीं तिथि को शिवरात्रि पर्व बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। सामान्यतः सभी लोग व्रत रखते हैं। सदाशिव मन्दिर में लोग प्रातः से लेकर शाम तक विल्वपत्र चढ़ाने तथा पूजा अर्चना के लिए विशेष रूप से आते हैं।

सैर : यह त्यौहार प्रथम आश्विन को मनाया जाता है। इसमें भी पकवान बनाए जाते हैं। भादों महीने की अन्तिम रात को नाई एक थाली में गलगल को मूर्ति के रूप में सजाकर व फूलों से सुसज्जित करके, दीपक जलाकर उसे गांव के प्रत्येक घर ले जाता है। लोग नतमस्तक हो उसका पूजन कर कुछ धन अर्पित करते हैं। दिन में मेलों का आयोजन होता है। यह त्यौहार वर्षा की समाप्ति और आषाढ़ी फसल के आने की खुशी में मनाया जाता है।

रखड़ून्या (रक्षाबन्धन) : यह त्यौहार सावन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों को तिलक लगाकर राखी बांधती हैं और अपनी सुरक्षा की आशा के साथ-साथ भाइयों की श्रीवृद्धि की कामना की करती हैं।

सामाजिक जीवन

भारथा : इसका आयोजन भादों महीने में किया जाता है। भारथ अथवा भारथा में वीर योद्धाओं से सम्बन्धित घटनाओं के गायन के रूप में किया जाता है। इनमें गुग्गा जाहरवीर, भर्तृहरि, माता रुक्मणी, भक्त पूर्णचन्द, श्रवण कुमार, राजा रविसेन और राजा बली की वीरगाथाएं सुनाई जाती हैं। इसे दो-दो की जोड़ियों में गाया जाता है। गायन पद्धति में मुखिया को आड़ी और उसी गायन को दोहराने वालों को पिछाड़ी कहा जाता है। इनमें एक ताल-मास्टर भी होता है, जो दोनों आड़ी और पिछाड़ी के मध्य ताल को नियन्त्रित करता है। भारथ का मुख्य उद्देश्य स्थानीय समाज में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक चेतना को जागृत करने के साथ-साथ विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध संघर्ष बनाए रखने का भाव भी शामिल है। भारथा में मनोरंजन के लिए प्रेम गाथाओं- श्यामू नार, रांझू-फूलमू आदि का गायन भी किया जाता है। भारथा में डौरु, थाली और हरमोनियम आदि वाद्ययंत्र प्रयोग में लाए जाते हैं। वर्तमान समय में भी लोग बड़े चाव से इस गायन का आनन्द लेते हैं। परसराम और उनके साथी भारथ गायन के प्रसिद्ध कलाकार थे।

धाजा : गीत और नाटक के माध्यम से चलने वाला यह कार्यक्रम हिमाचल के निचले क्षेत्र के लोगों का मुख्य मनोरंजन साधन रहा है। वर्तमान में धाजा मंचन में कमी अवश्य आई है, परन्तु फिर भी कुछ-स्थानों पर यदा-कदा इसका आयोजन होता रहता है। इसमें प्रश्नोत्तरी होती हैं। स्वांग निकाले जाते हैं, गायन होता है। कलाकारों को दर्शक पैसे भेंट करते हैं। इन्हीं मंचनों में से अनेक कलाकार तैयार होते रहे हैं।

परिधान

यहां के लोगों का परिधान साधारण रहा है। पुरुष कुर्ता, पजामा एवं धोती और सर पर साफा बांधते थे। औरतें कुर्ती-सलवार पहनती थीं। गरीब और मजदूर लोग ऊपरी वस्त्र में कुर्ता और अधोवस्त्रों में, कच्छा, कांच (लंगोटी) पहना करते थे। वर्तमान समय में पुरुषों के परिधान में काफी बदलाव देखने को मिलता है सामान्य प्रचलन के अन्तर्गत अधिकांश पुरुष पैंट और कमीज का प्रयोग करते हैं जबकि महिलाएं सलवार कमीज आदि पहनती हैं।

आभूषण

पंजगाई के पुरुष कानों में नन्तियां धारण किया करते थे तथा औरतें कानों की ब्रागर, बालियां, बालों में चाक, नाक में मुर्कू और लौंग, हाथों में चांदी के बने मोटे गजरू, गले में चांदी का बड़ा हार जिसे रानी हार कहते हैं, धारण करती थीं। इसके अतिरिक्त लोग अपनी ठोड़ी, गाल और बाजू के ऊपर टैटू भी बनवाते थे जिसमें ओम और तारे का निशान प्रमुख थे। कुछ लोग जंगली जानवरों को भी चित्रित करवाते थे। गाँव में लोग दांतों में पर सोने का खोल चढ़वाना अपनी शान मानते थे। छोटे बच्चों को चांदी से बने कंगनू पहनाए जाते थे।

श्मशान

पंजगाई का सांझा श्मशान घाट सतलुज नदी के किनारे बरमाणा में रामबाग नामक जगह पर है। पहले यह खुला हुआ करता था परन्तु वर्ष 1995 में एसीसी सीमेंट-फैक्ट्री द्वारा इसे नया रूप दिया गया। मृत्यु होने पर लोग अपने-अपने घरों से लकड़ी का एक-एक टुकड़ा लेकर उन्हें सड़क के किनारे एक जगह इकट्ठा करते हैं। किसी भी वाहन के माध्यम से ये लकड़ियाँ श्मशान घाट पर पहुंचाई जाती है। अंतिम संस्कार के बाद अस्थि-चयन करके उसी दिन हरिद्वार में अस्थियों को ले जाने की परम्परा है। हालाँकि पुराने समय में गाड़ियों की सुविधा न होने के कारण कुछ समय के लिए अस्थियों को अपने घर की दीवार पर लटका कर रखा जाता था। जब कोई सम्पन्न व्यक्ति हरिद्वार जाता तब उसे ये अस्थियों सौंप दी जाती थीं।

महिलाओं का योगदान

जन्म से लेकर मृत्यु तक भारतीय समाज में महिलाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पंजगाई गांव का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन भी उसी के इर्द-गिर्द घूमता है। गांव की दाई ही जच्चे-बच्चे की देखरेख किया करती थी। यहां की जोघया और बड्डी दाई जो जोघया से 10 वर्ष बड़ी थी, प्रसूति करवाने में प्रसिद्ध रही है। बड्डी फोकू लगाने के लिए भी जानी जाती थी। फोकू शरीर में दर्द को ठीक करने के लिए प्रयोग किया जाता था। सींग के माध्यम से इलाज के लिए बड्डी दाई पंजगाई और आस-पास के क्षेत्रों में प्रसिद्ध थी। फोकू विशेषकर बच्चों को लगाया जाता था। समाज के सभी सामाजिक-सांस्कृतिक और धार्मिक कार्य महिलाओं के आप-पास घूमते हैं। बच्चे के जन्म पर गीत, शादी-ब्याह के गीत, मन्दिर में भजन कीर्तन, यज्ञ-अनुष्ठान, मेले-त्यौहार में विविध पकवानों को बनाने में महिलाओं का ही योगदान रहता है। कृषि-कार्य, पशुपालन, कताई-बुनाई, सिलाई में महिलाओं की अग्रिम भूमिका प्राचीन समय से वर्तमान तक देखी जा सकती है। पंजगाईं में शिक्षा के क्षेत्र में विकास 1950 के बाद प्रारम्भ हुआ। वर्तमान समय में सरकारी सेवा, पंचायत कार्य में महिलाओं की भूमिका सराहनीय है। चम्पा नाम की महिला जिसने पीईटी की ट्रेनिंग की थी, द्वारा की गई भूख हड़ताल ने तो पूरे प्रदेश को हिला कर रख दिया था। हड़ताल के दौरान इसकी मृत्यु हो गई थी। चम्पा का बलिदान पंजगांई की महिलाओं को अपने अधिकारों हेतु संघर्ष के लिए प्रेरित करता है।

भाषा : पंजगाईं में कहलूरी बोली का प्रयोग किया जाता है।

स्थानीय भाषा के शब्द जो मुख्यतः क्षेत्र में बोले जाते हैं –

कीथा जो	- कहां को
उन्दे	- नीचे
छित्तर	- जूता
पाणी	- जल
दतयालू	- नाश्ता
पंछी	- पक्षी
बल़द	- बैल
मांजा, मजोली	- चारपाई
छान	- छप्पर
काआ	- घास
छल्ली	- मक्की
जाणा	- जाना
लकोली	- अलमारी
मेच	- मेज
मुन्नी	- लड़की
पाह्ऊ	- लड़का
माओ	- माता
बाबा, बुड़ा	- पिता
चह्गू	- कमीज
सुथनी	- पजामा
बाट	- रास्ता

खाद्य पदार्थ एवं बिलासपुरी धाम

बिलासपुरी धाम जो कि विवाह शादी और अन्य कार्यक्रमों में बनाई जाती है, पंजगाई गाँव की प्रसिद्ध है। यहां इस गांव में मुख्य रूप से धाम में पांच सब्जियां बनाई जाती हैं। धाम बनाने वाले को 'बोटी' कहा जाता है। यह कुछ इस तरीके से बनाई जाती है कि बच्चे बूढ़े बीमार एवं गर्भवती महिलाओं सहित सभी के लिए हितकारी हो। धाम में 1990 दशक तक अधिकतर स्थानीय उत्पादों का ही प्रयोग होता रहा, लेकिन बाद में बाजार से सामान लाने की परम्परा धीरे-धीरे बढ़ती गई। धाम में सामान्यतः चार पांच प्रकार के मदरे (विशेष प्रकार के व्यंजन) धुली, माह और घंडयाल़ी बनाए जाते हैं। यह परम्परा आज भी विद्यमान है। धुली दाल माश के मदरे को सबसे महंगा व्यंजन कहा जाता है। दूसरे स्थान पर

कद्दू का आमला बनाया जाता है। यह खट्टा होता है तथा छुहारे, खटाई, कद्दू, चने इन सभी का मिश्रण होता है। तीसरे स्थान पर साबुत माश की दाल बनाई जाती है। अगला व्यंजन कढ़ी-पकोड़े है। यह स्थानीय लस्सी और देसी बेसन से बनता है। पांचवें स्थान पर मीठा होता है जिसे बदाणा कहा जाता है। बदाणे का मीठा भी माश की दाल को पीस कर बनाया जाता है। हालाँकि वर्तमान में इन व्यंजनों की संख्या, सामग्री और बनाने में परिवर्तन आ गया है परन्तु पंजगांई की धाम और यहाँ के बोटी आज भी प्रसिद्ध हैं। यहां के प्रसिद्ध बोटियों में कांशी कुनणु, लोंगू राम और हरि राम कनौण आदि प्रमुख हैं।

दैनिक भोज्य : दैनिक भोज्य पदार्थों में यहाँ धान, मक्की, गेहूँ, कोदा; दालों में कोल्थ, माश, चने का अधिक प्रयोग किया जाता था। स्थानीय स्तर पर उपब्लध खाद्य पदार्थ और अनाज का प्रयोग खान-पान और तीज त्योहारों में किया जाता है। स्वतन्त्रता पूर्व गांव में होने वाला माश राजा बिलासपुर को भी भेजा जाता था जिसका प्रयोग चिनाई-गारे में भी होता था। गारा बनाने में चूना, गेरू, रेता और छिलका रहित माश का प्रयोग होता था। सरसों का साग, कढ़ी, दूध, दही, पनीर एवं खेरु का खूब प्रचलन था। छाछ से झोल व्यंजन भी बनाया जाता था। अगर कोई मेहमान आ जाए तो दूध, घी और शक्कर के साथ खाना देने की परम्परा रही है। यहाँ त्योहारों में अनेक प्रकार के पकवान बनाए जाते हैं। जैसे लोहड़ी में माश की खिचड़ी, तिल के तल्लुएं आदि। बैसाखी में दाल-भात और माश के भल्ले बनाए जाते हैं। शुद्ध घी का खूब प्रयोग होता है। व्रतों में बाथु की खीर तथा आलु की सब्जी बनाई जाती है। दिवाली पर विशेष खाद्य पदार्थ यथा– ऐंकलू, चिल्डू एवं पटाँडे बनाए जाते हैं। शरद पूर्णिमा के दिन विशेष रूप से खीर बनाई जाती है। लोकमान्यता है कि उस खीर को रात भर तारों की छाँव में रखकर, प्रातः सेवन करना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होता है। सर्दियों में कल़खिच्चड़, जो कुल्थ का बना होता है, को खाया जाता है। सर्दियों में कभी-कभी गुड़ वाला मीठा भात भी खाने का यहाँ प्रचलन रहा है।

सार्वजनिक सुविधाएं

बदलते परिवेश के साथ पंजगांई में सरकारी सुविधाओं के अतिरिक्त-गाड़ी पार्किंग, बच्चों के खेलने के लिए पार्क, जंज घर, सार्वजनिक रसोई-घर की सुविधा उपलब्ध है। गांव में सरकारी, गैर सरकारी विद्यालय, चिकित्सालय, पशु औषधालय कार्यरत हैं। यह प्रदेश के उन चुनिंदा गाँव में से एक है जहाँ लगभग 100 छोटी गाड़ियों के पार्क की सुविधा है। यहां के लोग कृषि कार्य के अतिरिक्त सबसे अधिक शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन एवं अध्यापन में कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त अन्य विभागों जैसे-बिजली, पानी, लोक निर्माण, पुलिस, सेना, वायुसेना, अरण्य, कृषि, चिकित्सा विभाग आदि में वर्तमान में बहुत से लोग सेवारत हैं।

शिक्षा

परंपरागत शिक्षा के क्षेत्र में यह गांव पहले से ही अग्रणी रहा है। यहां संस्कृत, ज्योतिष, कर्मकांड, हस्तरेखा, भृगु संहिता, आयुर्वेद आदि की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षकों में पोलो राम, कालिदास, मनोहर लाल और ठाकुर दास (पंजगांई) व जीवणु राम, दयाल राम (कनौण), का नाम लिया जा सकता है जो घर पर पारम्पारिक शिक्षा दिया करते थे।

आधुनिक शिक्षा की दृष्टि से इस गांव में प्रथम प्राथमिक विद्यालय लगभग 1940 में खुल गया था। बाद में इसे स्तरोनन्त करके माध्यमिक विद्यालय बना दिया गया। सन् 1957 में इसी विद्यालय को उच्च विद्यालय बना दिया गया। उस समय प्रदेश के सभी विद्यालय पंजाब विश्वविद्यालय से संबद्ध थे। सन् 1957 से पहले उच्च शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को बिलासपुर में जाना पड़ता था। श्री रामानुज संस्कृत महाविद्यालय की स्थानना 1985 में हुई। कई विद्यार्थी रोपड़, अमृतसर, लाहौर, काशी, अयोध्या आदि से भी उच्च शिक्षा ग्रहण किया करते थे। 1986 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय से जिसमें आज लगभग 800 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं – राजकीय प्राथमिक विद्यालय धौण-कोठी, राजकीय माध्यमिक विद्यालय धौण-कोठी, राजकीय प्राथमिक पाठशाला कनौण, राजकीय प्राथमिक पाठशाला थड़-मनाल़, राजकीय प्राथमिक पाठशाला कुन्नणु, राजकीय प्राथमिक पाठशाला टिकरी महादेव, राजकीय प्राथमिक केन्द्र पाठशाला, ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल पंजगाईं, रामानुज सर्वोदय विद्यापीठ, रामानुज संस्कृत महाविद्यालय आदि शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहे हैं।

पंजगाईं की परंपरागत प्राचीन विद्याएं

गांव में सांप का जहर उतारने में सिद्धहस्त वैद्य थे। यदि किसी को सांप काट लेता तो वैद्य के पास ले जाकर उसका उपचार करवाया जाता। वैद्य एक बणाऽ की टहनियां मंगवाता और विशेष मंत्र उच्चारण करते हुए उन टहनियों से झाड़ता था। इस क्रिया से लगभग 1 घंटे से 2 घंटे के बाद उसका जहर उतर जाता था। बतातें हैं कई बार उस जहर के प्रभाव से बणाऽ नाम की टहनियाँ भी सूखने लगती थी। चर्म रोग जैसे-किसी भी प्रकार का उपचार इस गांव में गौतम गोत्र के ब्राह्मण किया करते थे। लोक-मान्यता है कि ये लोग यदि राख को रुग्ण स्थान पर लगा देंगे तो चर्म रोग पुनः नहीं होगा। यह बात कई बार प्रत्यक्ष देखने को भी मिलती है।

पागल कुत्ते के काटने पर होने वाले रोग का उपचार यहां मंत्र विद्या में दक्ष लोग किया करते थे। वर्तमान में सुंदर सिंह ठाकुर गांव कोठी इस विद्या के विशेषज्ञ माने जाते हैं। इसकी विधि कुछ इस प्रकार है कि जिस व्यक्ति को पागल कुत्ते ने काटा हो उस व्यक्ति के मुंह के पास थोड़ी सी गीली मिट्टी ले जाकर उसका श्वास छुड़वाया जाता है। फिर मिट्टी को अभिमंत्रित करने के बाद उस मिट्टी को देखकर उसी के अनुसार उपचार किया जाता है। यह बहुत कठिन कार्य है। यदि उपचार में कुछ कमी रह जाए तो वैद्य उस व्यक्ति को अभिमंत्रित देसी शक्कर देता है। लोक विश्वास है कि उस शक्कर को खाने से व्यक्ति ठीक हो जाता है।

इस गांव में बाघ या तेंदुए से घायल व्यक्ति या किसी पशु का उपचार भी यहां के स्थानीय वैद्य एक विशेष औषधि द्वारा किया करते थे। जहां बाघ या तेंदुए द्वारा काटने के निशान हों एक औषधि जिस स्थानीय बोली में 'बघनौल' कहते हैं का लेप कई दिनों तक लगाया जाता है। इससे बाघ, तेंदुए के काटने का जहर खत्म हो जाता है। इन सभी विषयों में पंजगाईं में प्राचीन समय से ही सिद्धहस्त वैद्य रहे हैं। अन्य भी कुछ ऐसी विद्यायें हैं जिनमें यहां के लोग विशेषज्ञ माने जाते हैं। शरीर की हड्डी टूट जाने पर

यहां के वैद्य तेल और एलोवेरा, भांग, खट्टा, फिटकरी इन सभी पदार्थों को मिलाकर तैयार की गई औषधि से उपचार करते हैं। सबसे पहले टूटी हड्डी वाले स्थान पर तेल की मालिश की जाती है। फिर हड्डियों को सीधा करके बाद भांग, गलगल खट्टा, एलोवेरा फिटकरी और छाम्बर घास आदि का लेप उस स्थान पर किया जाता है। ज्योतिष विद्या में भी यहां के विद्वान सिद्धहस्त थे। गृह निर्माण के मुहूर्त के समय यदि बाघ गर्जना करे तो उसे बहुत ही अच्छा मुहूर्त जाना जाता है। ज्योतिष विद्या में तो यहां के विद्वान् कुराली एवं लाहौर आदि स्थानों के विद्वानों से भी तर्क-वितर्क किया करते थे। अगर किसी मुहूर्त में बारिश हो जाए तो इसका अर्थ है कि से प्रकृति द्वारा स्वीकृत एक श्रेष्ठ मुहूर्त है।

तंत्र विद्या में भी यहां के विद्वान मर्मज्ञ थे। अगर किसी बच्चे, व्यक्ति या जानवर को कोई तंत्र, मंत्र अथवा दृष्टि-दोष हुआ हो तो यहां के विद्वान धूनि, धागा, विभूति, अभिमन्त्रित जल आदि से उसका इलाज कर दिया करते थे। इस गांव के लोग सांप, बिच्छू के काटने पर उसका विष उतारने में भी सक्षम थे। बरसात के मौसम में इस गांव में जहरीला घास (करसैणा, बरू) होता है जिसको खाने से पशु मर जाते हैं। आज भी उसे काटने हेतु प्रयुक्त दराटी को अभिमंत्रित किया जाता है। विश्वास किया जाता है इससे काटे गए घास का पशुओं पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। लोक मान्यता है कि अगर बिना अभिमन्त्रित करके घास दिया जाए तो पशु निश्चित रूप से मर सकते हैं। यह विद्या आज भी यहाँ कुछ लोगों को ज्ञात है। अन्य प्रकार की मंत्र, तन्त्र विद्यायें जैसे- पीलिया झाड़ना, दाद और खुजली को ठीक करना, मौसम का पूर्वानुमान, भूमि के अन्दर पानी का ज्ञान, गृहनिर्माण मुहूर्त एवं वास्तुकला आदि इन सभी विद्याओं के ज्ञाता यहां उपलब्ध हैं।

कहावतें, लोकोक्तियां एवं मुहावरे

प्रत्येक जनपद में कुछ ठेठ उक्तियाँ होती हैं जो जुबान पर तैरती रहती हैं। इनके कहने का ढंग एवं भाषा बड़ी ठेठ व बेबाक होती है। ये बड़ी अर्थपूर्ण होती हैं और अपने क्षेत्र की संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज, परम्परा, इतिहास जानने में सहायक होती हैं। ऐसी ही कुछ कहावतें पंजगाईं क्षेत्र में भी प्रचलित हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही हैं। गांव के बुजुर्ग जब गुस्साते थे तो अपनी बात सीधे न कहकर उसे लघु वाक्यों में बोल किया करते। वर्तमान समाज में आज ये विलुप्त होती जा रही हैं। कुछ कहावतें लोकोक्तियां एवं मुहावरे जो आज भी प्रचलित हैं –

मूल	अनुवाद
चन्दरे रियां पन्दरा ओ पोह्ले रिया सोळा,	**ईमानदार का साथ भगवान देता है।**
मन चंगा ता चोलुनु बिच गंगा	**मन सच्चा तो घर के पानी में गंगा है।**
गोआ जो मिली गोह्, तेड़ी ओ, तेड़ी ओ।	**समान स्वभाव वाले**
आखरे पठाकरे करुए चार, एड़ा पता नेईं वार कि पार।	**जहां विशेष प्रकार के चार लोग हुए, लड़ाई की संभावना पक्की।**
भेड़ आंदी ऊना जो, तिसे कह्रा री कपाह भी खाई ती।	**लाया था भले के लिए, बिगाड़ के चला गया।**

कैहूना मोड़ना नी, ओ डक्का तोड़ना नी,	**न काम को इन्कार करना, न ही काम करना।**
अंधा गुरु, बैंहरा चेल्ला मांगे हरड़ दे बहेड़ा।	**नासमझ का सहयोग खतरे का घर।**
सौंदयं रे जम्मे कट्टू, जागदेयां रे जम्मिया कट्टियां ।	**कर्मशील व्यक्ति का भाग्य भी साथ देता है।**
परमात्मे रिया कहूड़िया देर ई, पर अन्धेर नी ।	**भगवान सदैव न्याय करता है।**
सब्र कर पाहूई, दूदा रा दूद, पाणिए रा पाणी उहूई जाणा।	**धैर्य रखो, सच सामने आएगा।**

अर्थव्यवस्था

1980 से पूर्व पंजगाईं के लोग रोजगार के लिए पूर्णतः कृषि पर आश्रित थे। यहां की भूमि उपजाऊ रही है। मैदानी भाग के अलावा आसपास की पहाड़ियों पर भी लोग प्राचीन काल से कृषि करते आए हैं। खरीफ की फसलों में मक्की प्रमुख रूप से उगाई जाती है। रबी की प्रमुख फसल गेहूं है। गांव में उत्पादित होने वाली वस्तुओं जैसे- घी, शक्कर, अदरक, हल्दी आदि को अच्छे मूल्य पर बेचने के लिए शिमला जाते थे। आजकल लोगों ने कृषि कार्य छोड़ दिया है जिसका मुख्य कारण आसपास में जंगली जानवरों, बंदरों, नीलगायों, सूअरों, चिड़ियों द्वारा फसलों को नुकसान पहुंचाना है। रोजगार के अन्य कई आसान साधन उपलब्ध होने से भी कृषि जैसे कठिन कार्य के प्रति लगाव कम हो गई। वर्तमान में व्यास नलक परियोजना और ए.सी.सी. सीमेंट फैक्ट्री में भी रोजगार के अवसर लोगों को मिले हैं। यहां के विष्णु नामक स्थान पर उपलब्ध चूना पत्थर लोगों के रोजगार का साधन था। अब यहाँ लोग कृषि के बजाय इन फैक्ट्रियों में काम करना ज्यादा पसंद करते हैं। हालांकि कृषि आज भी की जाती है लेकिन उस स्तर पर नहीं है जो पहले थी। लोगों का झुकाव दूध बेचने की तरफ अब ज्यादा है, क्योंकि साथ वाले क्षेत्र में दूध प्रोसेसिंग प्लांट लगने से घर का अतिरिक्त दूध आसानी से विक्रय हो जाता है। सरकारी राशन डिपुओं में सस्ता और बाजार में सुगमता से उपलब्ध होने वाला राशन भी इसका एक कारण है, जो कि लोगों को परंपरागत कृषि से दूर कर रहा है। वर्तमान गाँव के पहाड़ी वाले खेत तो बिल्कुल ही उजड़ चुके हैं।

कृषि : पंजगाई में रबी तथा खरीफ फसलें होती हैं। खरीफ की फसलों में मक्का और धान होते थे। मक्का की फसल आज भी होती है। आज भी गन्ने की खेती गाहर-टिकरी, रोपा, कनौण-बगौण, धौणकोठी और बलोह में की जाती है। गन्ना पीराई से बैलों की सहायता की जाती रही है। यह काम फरवरी महीने में शुरू होकर अप्रैल महीने तक लगभग तीन महीने तक चलता था। अब गाँव में परम्परागत बेलनों से पिराई नहीं होती है। एक समय था जब दुकान से गाँव में नमक के सिवाए कुछ भी खरीदना नहीं पड़ता था। मक्की कटाई के बाद मक्की के खेत में हल चलाने को 'ककरयाड़ी' करना कहा जाता है। गेहूँ के खेत में कटाई के बाद हल चलाने को 'तवाहड़' करना कहते हैं। हल चलाने का विशेष समय होता था जो फसल कटाई के बाद लगभग बीस दिनों के अन्दर पूरा किया जाता था। वर्तमान में ट्रैक्टर से बीजाई करने के परिणामस्वरूप ये सारी प्रक्रिया समाप्त हो चुकी है। अब लोग एक ही बार में ट्रैक्टर से बीजाई करते हैं। जिससे पारम्परिक कृषि समाप्त हो रही है।

पशुधन : कृषि के अलावा लोगों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन रहा है। जिनमें गाय, भैंस व भेड़-बकरियां पाली जाती हैं। पहले रोज बरमाणा फैक्ट्री कालोनी व पास के बाजार में दूध बेचा जाता था। वर्तमान में बिलासपुर के नम्होल नामक स्थान पर स्थापित कामधेनू दूध संयत्र को गांव द्वारा दूध बेचा जाता है। जिससे ग्रामीण लोगों की आमदनी में बढ़ौतरी हुई है।

चरागाह : चरागाही भूमि गाँव की सामान्य सम्पति मानी जाती थी जिसका उपयोग गाँव के लोग स्वतंत्रतापूर्वक करते थे। पंजगाई, बलोह, धोन कोठी, रोपा बगोंण और कनौण में बहुत सारी भूमि चरागाह में आती थी जो 1990 के बाद से ग्रामीण परिवेश की यह पहचान खत्म हो रही है, क्योंकि खेती के लिए बैल का स्थान ट्रेक्टर ने ले लिया, चरागाह स्थल आधुनिक विकास परियोजनाओं में चले गए, घरेलू खाद की जगह रासायनिक खाद आ गई और गाय भेंस के दूध की जगह डेरियों ने ले ली है।

घराट : टिकरी सदाशिव मन्दिर के नीचे खड्ड में एक घराट है, जिसे तारुआ रा घराट कहा जाता है। 2000 ईस्वी के बाद यह चलन में नहीं है, परन्तु उसका अस्तित्व मौजूद है।

वनस्पति एवं जड़ी-बूटियां

गांव में वनस्पतिक की विविधता देखने को मिलती है। यहां की पहाड़ियों पर नाना प्रकार की जड़ी बूटियां एवं औषधियां पाई जाती हैं। उनमें स्थानीय भाषा में कुछ प्रमुख नाम वह हैं - गिलोय, हरड़, बहेड़ा, आमला, रीठा, छीकबेल, बिलगिरी, फूलणु घास, अल्ताश, मेहंदी, अखरोट, तिरमिरा (तुम्बरू), व्यूहल, खैर, बणा, जामण, कैन्थ, बसूटी, बरया इत्यादि। कुछ औषधियों और गुणों से युक्त विविध वनस्पतियों का वर्णन इस प्रकार से हैं -

गिलोय : गिलोय की बेल पेड़ों व झाड़ियों पर फैलती है। यह मधुमेह, यूरिक एसिड तथा वात रोगों के लिए उपयोगी है। कोविड-19, कोरोना काल में इम्युनिटी सिस्टम को दुरुस्त करने में इस औषधि भरपूर उपयोग किया गया था। इसको आयुर्वेद में अमृता कहा जाता है। इसका प्रयोग हवन में भी किया जाता है।

बणां : यह झाड़ीनुमा पौधा है जो कि इस क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह वात, पित्त, कफ, त्रिदोष नाशक माना जाता है। यहां एक कहावत प्रचलित है कि – **जेथी बणां बसूटी बरयां, ओथी माणु कियां मरयां**। अर्थात् जहां बणा, बसूटी और बरया हों वहां भला आदमी कैसे मर सकता है... गांव में जहां बणां अधिक मात्रा में मिलता है उस स्थान का नाम 'बणां रा घाट' ही पड़ गया है। यह सर्पदंश के समय झाड़ा करने के काम आता है। गांव में शादी के समय दूल्हे और दुल्हन को विशेषरूप से बणें के नीचे 'नोनी' बनाकर स्नान करवाने की परम्परा आज भी जीवित है। यह खाने में कड़वा होता है। पशुओं के पेट की गर्मी मारने के लिए लोग इसे चारे के साथ काटकर खिलाते हैं। गुप्त चोट में इसका सैंक दिया जाता है।

बसूटी : बसूटी की झाड़ी में अनेक टहनियां होती हैं। यह प्रभावशाली औषधि होती है। औषधि के अतिरिक्त इसका उपयोग बरसात में पशुओं के बिछौने के तौर पर भी किया जाता है। पुराने

समय से आम, केला आदि फलों को पकाने के लिए भी इस बूटी को इस्तेमाल में लाया जाता रहा है तथा गुम चोट और फोड़ा फूंसी होने पर भी इसका प्रयोग किया जाता है।

बरयां : यह त्रिदोष नाशक होती है। गुप्त चोट पर इसका लेपन किया जाता है। यह यहां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

छीकबेल : यह एक प्रकार की लता होती है। इसके पत्तों को पीसकर उसका रस नाक में डालने से नजला, जुखाम, खांसी, पुराना बुखार, छाती में कफ आदि सभी बीमारियां दूर हो जाती हैं। इसका प्रयोग छोटे बच्चों के लिए बहुत उपयोगी माना जाता है।

नछछड़ी घास : यह एक बेल होती है। घाव पर इसका लेपन करने से वह जल्दी भर जाता है।

तुलसी : तुलसी के पौधे का धार्मिक और औषधीय महत्व है। इसके पौधे पूरे भारत में पाए जाते हैं। तुलसी के पत्तों का उपयोग सर्दी-जुकाम, खांसी, लीवर, मलेरिया, दांत और श्वास सम्बंधी बीमारियों की रोकथाम के लिए किया जाता है। कई मामलों में तुलसी का उपयोग लीवर टानिक के रूप में भी किया जाता है।

तिरमिरा : इसका प्रयोग औषधि और सब्जी दोनों में किया जाता है। इसकी दातुन करने पर दांत तथा मुंह का सारा गंद बाहर निकल जाता हैं, दांत भी मजबूत रहते हैं तथा वाणी दोष में भी राहत मिलती है। इसके बीज खाने से बच्चों का वाणी विकार दूर होता है। यह वृक्ष तांत्रिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है। भाद्रपद महीने की चतुर्दशी और अमावस्या को इसके पत्तों को घरों के सामने दरवाजे पर लगाने की परंम्परा है। लोगों में ऐसी मान्यता है कि इससे घर में प्रकारात्मक शक्ति प्रवेश नहीं करती।

जामुन : जामुन मधुमेह रोगियों के लिए अमृत स्वरूप माना जाता है। इसके फल और गुठलियों दोनों मधुमेह रोगियों के लिए लाभदायक होती हैं। इसके वृक्ष भी यहां पर्याप्त मात्रा में हैं।

हरड़ : हरड़ का पेड़ काफी बड़ा होता है। इसका अनेक औषधियों में प्रयोग होता है। इसके फल, छाल और गुठली तीनों उपयोगी होते हैं। गले को साफ करने के लिए यह उपयोगी मानी गई है।

बहेड़ा : यह भी एक बड़ा पेड़ होता है। इसकी छाल कालिमायुक्त भूरी और खुरदुरी होती है। इसके फल, फूल, बीज, छाल सभी दवा के तौर पर प्रयोग में लाए जाते हैं।

आंवला : यहां की पहाड़ियों पर प्रचुर मात्रा में मिलता है। इसकी अनेक किस्में हैं। देसी आंवला औषधीय गुणों में सर्वोत्तम है। यह विटामिन-सी का बहुत ही अच्छा स्रोत है तथा त्वचा रोगों एवं बालों के लिए बहुत उपयोगी है। शरीर प्रत्येक कमी को यह पूरा करता है। इसके महत्व के कारण ही यहाँ एक कहावत प्रचलित है। 'स्याणे री ग्लाई कनें आमले़ री खटयाई बादा ते-इ याद आईं'। अर्थात् बुजुर्ग का कहा और आंवले का स्वाद बाद में ही पता चलता है।

बिलगिरी : यह भी एक प्राचीन औषधि है जो शरीर के पित्त को शांत करती है। इसका पेड़ क्षेत्र की पहाड़ियों पर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इसका धार्मिक महत्व भी है।

अलताश : यह भी एक प्रसिद्ध औषधि मानी जाती है। इसको स्थानीय भाषा में आलस कहा जाता है यह पेट के रोगों के लिए गुणकारी होती है।

मेहंदी : मेहंदी भी इस क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में पाई जाती थी परंतु वर्तमान समय में इसकी उपलब्धता कम हो गई है। इसकी एक अन्य किस्म मैंहन्दु है जो यहां पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

अखरोट : फल के साथ-साथ अखरोट औषधीय गुणों वाला एक पेड़ है। इसके पत्तों से पुराने समय में महिलाएं अपने होठों को लाल करती थीं यह यहाँ की महिलाओं का शृंगार का एक हिस्सा हुआ करता था। यहाँ के वैद्य इसे कई प्रकार की औषधियों के रूप में भी प्रयोग किया करते थे।

रीठा : इसका प्रयोग साबुन बनाने में भी किया जाता है। इसका पेड़ क्षेत्र की पहाड़ियों में पाया जाता है। पहले रीठा कपड़े धोने के लिए प्रयोग किया जाता था।

ब्यूहल : हालाँकि गाँव में ब्यूहल वैसे तो पशु-चारे हेतु प्रयोग में लाया जाता है परन्तु इसके फलों का औषधि रूप में उपयोग किया जाता है। इसके फलों का रस अगर फटी एड़ियों में लगाया जाए तो वह ठीक हो जाती हैं।

खैर : खैर शिवालिक पहाड़ियों में पाई जाने वाली प्रमुख वनस्पति है। इसके कई औषधीय गुण हैं। इसका कत्था बनता है जो गले के लिए गुणकारी माना जाता है। इससे कई प्रकार की औषधियों का निर्माण होता है। यह इस क्षेत्र में यह प्रचुर मात्रा में मिलता है।

कैंथ : यह भी एक गुणकारी फल है। इसका सेवन शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक है। यह इस क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।[3]

क्रूंदू (गरनू), कशमल़, शीमल़, पीपल, बरगद, आम, तुनी, खिड़क, त्रियंबल़, फेगड़े, शहतूत, टाह्ली, चीड़, सफेदा, कचनार, रामबाण, टौंर आदि अनेक प्रकार के वन्य वृक्ष एवं झाड़ियां यहां प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

बाजार व्यवसाय

पंजगाई में 30 से अधिक दुकाने हैं। जहां लगभग सभी प्रकार का सामान मिलता है। गांव के एक बुजुर्ग श्री रामानन्द बताते हैं कि यहाँ पर कुडुमल सालीग्राम नाम से एक दुकान हुआ करती थी। उस दुकान में हर प्रकार की चीजें व दवाइयाँ मिलती थीं। मेले और छिंज के दौरान चलती-फिरती दुकानें लगाई जाती थीं। आज पंजगाई ने एक कस्बे का रूप धारण कर लिया है जहां एक छोटा सा बाजार है। बाजार में बैंक सुविधा भी है। 1980 से पूर्व कुडुमल सालीग्राम ही जमीन रैहन के बदले में लोगों को कर्ज़ दिया करते थे।

व्यक्तित्व

गोपाल दत्त : भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में यहां के कन्नौण गांव के एक शूरवीर पंडित गोपाल दत्त का नाम अग्रणी है। गोपाल दत्त का जन्म 20 अप्रैल, 1900 को मिसरु राम और नानकी देवी के घर हुआ। गोपाल दत्त बचपन से ही असाधारण प्रतिभा और धार्मिक विचारों के धनी थे। बचपन में

उनके माता-पिता का देहान्त हो गया था। गोपाल दत्त ने संस्कृत व हिंदी की पढ़ाई घर पर ही की और अपने जीवनयापन के लिए नदी से लकड़ी पकड़ने का कार्य प्रारम्भ किया। उन्हें इस में संतुष्टि न मिली तो वह अंग्रेजों की सेना में भर्ती हो गए। तब महात्मा गांधी अंग्रेजी सेना में भारतीयों की भर्ती का विरोध कर रहे थे। इससे प्रेरित होकर उन्होंने दे दिया। उसके बाद वह अनपढ़ लोगों को पढ़ाने का कार्य करने लगे। वह महात्मा गांधी के पक्के अनुयायी थे। गांधी जी जब शिमला आते तो एक विशेष संदेशवाहक पण्डित गोपाल दत्त को बुलाने कन्नौण गांव आता था।

सन् 1937-38 में बिलासपुर के राजा आनंद चंद एवं अंग्रेजों के विरुद्ध किसानों द्वारा किए गए आन्दोलन में गोपाल दत्त ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। आंदोलनकारियों पर राजा द्वारा अनेक मुकद्दमे चलाए गए। कुछ को तो जुर्माना करके छोड़ दिया गया लेकिन पंडित गोपाल दत्त को देशद्रोही करार देते हुए 7 साल की कठोर कैद व एक सौ रुपए का जुर्माना किया गया। देश जब स्वतंत्र हुआ तो राजा आनंद चंद ने भारतीय गणतंत्र में शामिल न होने का निर्णय लेकर आजादी का जश्न मनाने और तिरंगा फहराने पर पूर्ण रोक लगा दी। पंडित गोपाल दत्त को राजा का यह फरमान रास नहीं आया और 15 अगस्त, 1947 को प्रातःकाल अपने गांव कन्नौण में उन्होंने तिरंगा फहरा दिया। राजा आनंद चंद को जब यह समाचार मिला तो उन्होंने पंडित गोपाल दत्त को उनके साथियों सहित पुनः गिरफ्तार कर जेल में बंद करवा दिया। पंडित गोपाल दत्त शर्मा स्वयं तो त्यागी थे ही उनकी पत्नी भी समर्पण में उनसे कुछ कम न थी। पंडित गोपाल दत्त व सरस्वती देवी ने सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध के समय अपने सारे गहने भारत सरकार को आर्थिक मदद के रूप में देकर राष्ट्र के प्रति समर्पण की मिसाल कायम की।

पंडित गोपाल दत्त शर्मा ने जीवन में जहां अनेक कष्ट सहे वहीं बाद में उनका परिवार धीरे-धीरे स्वाबलंबी होता गया। अंततः प्रजामंडल के सक्रिय कार्यकर्त्ता और अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध आजादी का बिगुल फूंकने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी पंडित गोपाल दत्त शर्मा ने 28 जनवरी, 1973 को इस नश्वर संसार से विदा ली। सादगी, सादा व्यवहार, सद्विचार, सज्जनता, निडरता, स्पष्टवादिता, निस्वार्थता और देशभक्ति से परिपूर्ण उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों को युगों-युगों तक प्रेरणा देता रहेगा।[17]

चम्पा देवी : पुरुषों के साथ-साथ यहां की स्त्रियों का भी हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। यहां की महिलाएं अग्रिम पंक्ति में रही हैं। पंजगांई के लोग अपनी बात और विश्वास के दृढ़ होते हैं जो निर्णय एक बार लेते थे उसे पूरा करवाने के लिए अपने प्राणों की बाजी भी लगा दिया करते। इसका एक उदाहरण है जब 70 के दशक में बिलासपुर जिला के प्रशिक्षित अध्यापक अपनी माँगों को लेकर खाली स्थान में बैठे हुए थे लेकिन सरकार और प्रशासन ने उनकी मांगों को लेकर कोई गंभीरता नहीं दिखाई। परिणामस्वरूप यह हड़ताल आगे बढ़ती गई। इस हड़ताल में पंजगाई की चंपा नामक एक अध्यापिका जो पी.ई.टी प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापिका थी और अपनी मांगों के प्रति दृढ़ संकल्प होकर हड़ताल में शामिल थी। हड़ताल में उसने अन्न-जल ग्रहण करना छोड़ दिया। 15 दिनों बाद उस

अध्यापिका ने अपने प्राण त्याग दिए। इससे घबराकर सरकार और प्रशासन को अध्यापकों की मांगें माननी पड़ी। हड़ताल वाले स्थान पर एक पार्क का निर्माण करवाया गया जिसका चंपा पार्क नाम रखा गया। आज भी सरकार के विरुद्ध प्रदर्शन करना हो तो इसी पार्क में किया जाता है।[18]

पं. पोहलो राम : वर्ष 1919 में पण्डित रघा राम के घर जन्में पं. पोहलो राम पंजगाई इलाके में जाने-माने पण्डित थे। इनकी शिक्षा-दीक्षा रोपड़ में एक गुरुकुल में हुई थी। वह ज्योतिष विद्या के प्रकाण्ड विद्वान थे। वर्तमान में पंजगाई क्षेत्र के कर्म-काण्ड और ज्योतिष कार्य करने वाले प. पोहलो राम के वह शिष्य हैं। 1997 में पं. पोहलो राम का स्वर्गवास हो गया।

महंत स्वामी राम मोहनदास

पंजगाई का राधा कृष्ण मंदिर के महंत स्वामी राम मोहनदास हैं। इनका जन्म मध्य प्रदेश के ग्वालियर जनपद में सोहन ग्राम में कर्मकांड मार्तंड जी पूज्य पंडित श्री किशोरी शरण के घर 19 फरवरी, 1949 को हुआ। बाल्यकाल की शिक्षा गांव में ही हुई। परिवार की अनुमति से इन्होंने संत बनने का निर्णय लिया। आठवीं की परीक्षा पास करने के बाद इनके पिता इन्हें श्रीधाम आयोध्या ले गए। वहां पर अध्ययन के लिए संत श्री अखिलेश्वर दास के आश्रम में छोड़ दिया। 1961 में इस बीच 1964 परम पूजनीय सरसंघचालक श्री गुरुजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। स्वामी राम मोहनदास लगातार भारत के अलग-अलग राज्यों में काम करते रहे हैं। सन 1998 के अक्टूबर माह में स्वामी मोहनदास पंजगाई के इस राधा कृष्ण मंदिर के महंत बने और 2002 में रामानुज संस्कृत महाविद्यालय का निर्माण करवाया। 2006 में परम पूजनीय गुरुजी के जन्म शताब्दी महोत्सव के दौरान हिमाचल में 350 के करीब सभाएं कीं। स्वामी जी मठ-मंदिरों के सरकारी नियन्त्रण के खिलाफ हैं। इसके लिए उन्होंने प्रदेशव्यापी एक आंदोलन किया। इन्होंने बिलासपुर जिला के श्रीनैना देवी के लहरी बरोटा पंचायत में एक गौ-सदन का निर्माण करवाया जिसमें 300 के करीब गोवंश की सेवा हो रही है।[19]

समाज के प्रमुख अन्य व्यक्तियों में घुंगर राम कनौण, कृष्णदास ठाकुर बलोह, सुन्दर सिंह ठाकुर कोठी, स्वर्गीय रामदितु छिम्बा कनौण, किशोरी लाल खत्री पंजगाई, डॉ. जयनन्द शर्मा बगोण, सुखराम गाहर, स्वर्गीय रामदितु कुम्हार और पण्डित कालिदास पंजगाई का नाम सम्मिलित किया जाना समुचित है।

शब्दावली

पंजगांई रा ख़ाल़ा	– खाल़/खाल़ा वह क्षेत्र जो चारों ओर से बन्द हो
मुराड़े	– अत्याधिक गर्मी
लो-संगोह	– अत्याधिक वर्षा वाले दिन
फोकू	– फोकू एक रूप में प्रयोग किया जाता था।
संगोह	– एक पखवाड़ा जिसमें अधिक वर्षा होती है
टियाल़ा	– पत्थरों से बना हुआ चबूतरा
बीऽई	– कच्चे मकान की ऊपरी मंज़िल के भीतर वाला कमरा

पोड़ा	– कच्चे मकान के ऊपरी मंज़िल का बाहर वाला कमरा
ओबरा	– कच्चे मकान की निचली मंज़िल के भीतर वाला कमरा
नन्तियां	– कान का आभूषण
मुर्कू	– नाक का आभूषण
लौंग	– नाक का आभूषण

संदर्भ :

1. डॉ. रविन्द्र कुमार ठाकुर, बिलासपुरी लोक-कहावतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन : निर्मला प्रकाशन, स्वतन्त्रता सेनानी सदन, बिलासपुर हि.प्र. संस्करण 2016, पृ. 17
2. History of The Panjab Hill States J. Hutchison, J. PH Vogel, Volume – II, page 500-501
3. रूप शर्मा, हिम दर्पण, करन प्रकाशन, लोअर बाजार बलदवाड़ा संस्करण 2012 पृ. 201, दूसरा तारीखे रियासत हंडूर - पृ. 62
4. स्वामी राममोहन दास, महंत, पंजगाईं, आयु : 75 वर्ष।
5. रूप शर्मा, हिम दर्पण करन प्रकाशन लोअर बाजार बलदवाड़ा संस्करण 2012 पृ. 201, दूसरा तारीख़े रियासत हंडूर - पृ. 222
6. कुलदीप कुमार कैथ, कनौंण, आयु : 54 वर्ष।
7. रामेश्वर दत्त गौतम, पंजगाईं, आयु : 70 वर्ष।
8. पं. देवी दयालु, लाहौरी, पंचांग दिवाकर, 148 वां प्रकाशन 2023
9. रामानन्द शर्मा, पंजगाईं, आयु : 86 वर्ष।
10. संदीप शर्मा, गाहर, आयु : 35 वर्ष।
11. कादशी देवी, पंजगाईं, आयु : 85 वर्ष।
12. सुखराम ठाकुर, गाहर, आयु : 85 वर्ष।
13. रत्नलाल महाजन, कनौण, आयु : 74 वर्ष।
14. Shakti S. Chandel, Bilaspur through the century, Gopsons paper Ltd. Noida, 2007, P. 12
15. शुन्कू राम, धौनकोठी, आयु 75 वर्ष।
16. साखी राम शर्मा, कनौंण, आयु : 64 वर्ष।

सहायक आचार्य
राजकीय महाविद्यालय झंण्डुता
जिला बिलासपुर (हि.प्र.)

पंजगाईं आलेख से सम्बन्धित चित्र

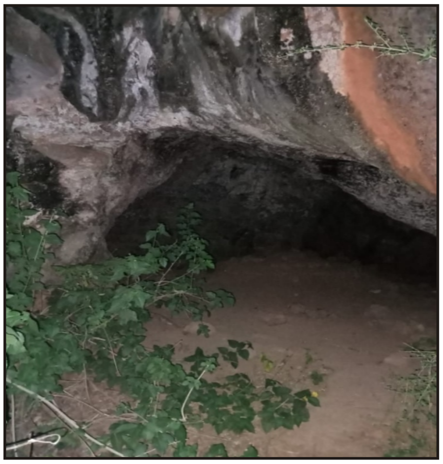

पंजगाईं गांव में स्थित पाण्डव गुफा

देवघाट व भीमघाट

देव बाड्डूबाड़ा स्थल

कनौण जलस्रोत

पंजगाईं स्थित पंज बेंटलू

ऐतिहासिक सदाशिव मन्दिर

जालपा माता मन्दिर

कामाक्षा माता मन्दिर

चार धाम मन्दिर

काला बाबा

गुग्गा मण्डली द्वारा गुग्गा जाहरवीर गाथा गायन

गांव का स्लेटपोश मकान

चित्र सौजन्य : लेखक